Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 26

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बद्र

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 जविल कअदह 1442 हिज्री कमरी 1 वफा 1400 हिज्री शम्सी 1 जुलाई 2021 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابۡتَغُوۡۤا اِلَيۡهِ الۡوَسِيۡلَةَ وَجَاهِدُوۡا فِىۡ سَبِيۡلِهٖ لَعَلَّكُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ

(सूरत अल्मायदा आयत : 36)

अनुवाद : हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह का संयम धारण करो और उस की प्रसन्नता का माध्यम ढूंढ़ो और उसकी राह में जिहाद करो ताकि तुम सफ़ल हो।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

फ़ज्र की नमाज़ का महत्त्व

(1351) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब उहद की लड़ाई हुई तो मेरे बाप ने रात को मुझे बुलाया और कहा : मुझे यही मालूम होता है कि मैं भी नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के उन साथीयों के साथ मारा जाऊँगा जो पहले शहीद होंगे और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात के सिवा अपने बाद तुझ से ज़्यादा अज़ीज़ अपने लिए किसी को नहीं छोड़ रहा और मुझ पर क़र्ज़ है उसे अदा कर देना और अपनी बहनों से अच्छा व्यवहार करना। हम सुबह उठे तो मेरे बाप ही पहले शहीद हुए और मैं ने उनको क़ब्र में दफ़न किया। उनके साथ एक और भी था। इसके बाद मेरे नफ़्स ने गवारा न किया कि मैं दूसरे के साथ उन को रहने दूं। इस लिए मैं ने उनको छ: माह के बाद निकाला तो क्या देखता हूँ वे वैसे ही हैं जैसे उस दिन थे जिस दिन मैंने उनको रखा था। सिवाए हल्के से बदलाव के जो उन के कान में था।

हज़रत सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वली ऊल्लाह शाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़ेअल शख़्सी है अर्थात अपने ज़ाती भावनाओ की नौईयत रखता है इस लिए फ़तवे का आधार इस पर नहीं रखा जा सकता। कुछ फ़ुक़हा ने मय्यत को क़ब्र में दफ़नाने के बाद निकालना पूर्णता मना किया गया है। इमाम बुख़ारी रहमहुल्लाह इस फ़तवे की ताईद में नहीं।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुल जनायज़, प्रकाशन 2006 क़ादियान)

नसीबैन के हाक़िम ने मसीह अलैहिस्सलाम को जब वह अपनी क़ौम के हाथ से कष्ट उठा रहे थे लिखा था कि आप मेरे पास चले आएं इस लिए यह विश्वास होता है कि मसीह अलैहिस्सलाम नसीबैन में ज़रूर आए और इसी मार्ग से वह हिन्दुस्तान को चले आए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस विषय का महत्त्व

इस एक विषय से ईसाइयत का स्तून भी टूट जाता है,क्योंकि जब सलीब पर मसीह की मौत ही नहीं हुई और वह तीन दिन के बाद ज़िन्दा हो कर आसमान पर ही नहीं गए, तो उलूहियत और कफ़्फ़ारा की इमारत तू बुनियाद तथा नींव से गिर पड़ी और मुसलमानों का ग़लत ख़्याल (जिससे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सख़्त अपमान होता था कि वह ज़िन्दा आसमान पर चले गए हैं और फिर नाज़िल होंगे ;हालाँकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद कोई नया , पुराना नबी नहीं आ सकता जिस की नबुव्वत पर आप की मुहर न हो)भी दूर हो गया। और क़ुरआन शरीफ़ की मूल और पवित्र शिक्षा सच्ची साबित हो गई। क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ में तो मसीह अलैहिस्सलाम का साफ़ इक़रार فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِىۡ फ़लम्मा तौफ़्फ़यतनी का मौजूद है, जिससे कोई इन्कार नहीं सकता।

वफ़ात मसीह के विषय पर ज़ोर देने का कारण

यही कारण है कि हम वफ़ात मसीह के विषय पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं, क्योंकि इसी मौत के साथ ईसाई मज़हब की भी मौत है उसी उद्देश्य से मैंने किताब मसीह हिन्दुस्तान में लिखनी शुरू की है और इस किताब के कुछ उद्देश्यों की पूर्णता के लिए मैंने उचित समझा है कि अपनी जमाअत में से कुछ आदमियों को भेजूँ। जो इन इलाक़ों में जा कर उन निशानों का पता लाएं, जिनका वहां मौजूद होना बताया जाता है;अत: इस उद्देश्य को समक्ष रखकर हम ने यह जलसा किया है,ताकि उन दोस्तों को विदा करने से पहले हम सब मिलकर उन के लिए दुआएं करें कि वे ख़ैरियत के साथ इस मुबारक सफ़र के लिए विदा हों और कामयाब हो कर आएं।

हज़रत मसीह का सलीब की घटना के बाद नसीबैन जाना

यद्यपि मैं विश्वास रखता हूँ कि यह सफ़र जो रखा गया है। यदि न भी किया जाता, तो भी ख़ुदा तआला ने केवल अपने फ़ज़ल से इतने साक्ष्य और दलीलें हमको इस बाते के लिए दे दी हैं,जिनको विरोधी का क़लम और ज़बान तोड़ नहीं सकती, परन्तु शेष पृष्ठ 12 पर

काश जमाअत अहमदिया अपनी ज़िम्मेदारी को समझे और इस्लाम के खोए हुए सम्मान को फिर वापिस लाए और फिर वही आचरण मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलामों में दुनिया देखे जिन्हें देख कर इन्सान को ख़ुदा तआला नज़र आ जाता है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं : ऐसा ही शब्द हमीद के अधीन मुस्लमानों की वह हमद हुई कि उसकी मिसाल नहीं मिलती। मुस्लमान का शब्द एक ज़मानत होती थी जिसमें कोई संदेह नहीं करता था। उस का वादा एक आकाशिय तक़दीर समझी जाती थी जिसे कोई टाल नहीं सकता था। उनकी प्रशंसा की गूंज आज भी दुनिया में सुनाई दे रही है। उदाहरणत: एक यही वाक़िया ले लो कि एक दफ़ा एक व्यक्तिसे कोई ऐसा जुर्म हुआ जो उसे क़तल के दण्ड का हक़दार बनाता था। जब वे ख़लीफ़-ए-वक़्त के सामने पेश हुआ तो उसने सज़ा के सुनने के बाद अर्ज़ की कि मेरे पास कुछ अमानतें और ज़िम्मेदारियाँ अपने अनाथ भतीजों की हैं, उनको मेरे सिवा और कोई नहीं जानता मुझे कल उस वक़्त तक आप मोहलत दें वह काम करके फिर हाज़िर हो जाऊँगा। ख़लीफ़ा ने कहा कोई गवाह पेश करो। उसने ख़लीफ़ा की मजलिस में एक (अबूज़र) की तरफ़ इशारा किया कि यह मेरे ज़ामिन हैं हालाँकि वह सहाबी उसको बिल्कुल नहीं जानते थे। परन्तु केवल मुस्लमान होने की वजह से और इस लिए कि उसने आपसे एक बड़ी ज़िम्मेदारी की आशा की थी अपनी शराफ़त और वक़ार को दृष्टिगत रखते हुए उसकी ज़मानत दे दी लेकिन निर्धारित वक़्त क़रीब आ गया और वह नहीं पहुंचा। लोगों ने हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि वह कौन था तो उन्होंने कहा मैं नहीं जानता कि वह कौन था। एक शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-18)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल का जलसा सालाना जर्मनी के दूसरे दिन ग़ैर अहमदी जर्मन मेहमानों से ख़िताब,मेहमानों के विचार

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

(हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के भाषण का मुकम्मल मतन इन शा अल्लाह आइन्दा किसी अंक में प्रकाशित होगा)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण एक बजकर 25 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद मेम्बरात लजना और नास्रात के विभिन्न समूहों ने अरबी, उर्दू, जर्मन, स्पेनिश, तुर्की, इंग्लिश, बंगला, कश्मीरी और पंजाबी भाषा में नज़्में और तराने प्रस्तुत किए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कम आयु वाले बच्चों की मारकी में भी तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को अपने मध्य पा कर महिलाओं और बच्चों की ख़ुशी असीमत थी। इस मारकी में भी प्यारे आक़ा की सेवा में दुआइया नज़्में और तराने प्रस्तुत किए गए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दो बजे मर्दाना जलसा गाह में पधारे और ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें जमा करके पढ़ाई और नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान में तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के अनुसार चार बजे दोपहर को सय्यदना हज़रत अमीर अलममनीन ख़लीफ़उल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जर्मन मेहमानों के साथ एक प्रोग्राम में शामिल होने के लिए मर्दाना जलसा गाह पधारे। जर्मनी के विभिन्न शहरों और इलाक़ों से आने वाले जर्मन मेहमानों के साथ यह प्रोग्राम कुछ समय पहले से था।

इस प्रोग्राम में शामिल होने वाले मेहमानों की संख्या 1488 थी। जर्मनी में आबाद विभिन्न क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले 445 मेहमान इस प्रोग्राम में शामिल हुए। इस के अतिरिक्त विभिन्न अरब देशों के 218 मेहमान शामिल हुए।

इसके अतिरिक्त बलग़ारिया, मेसीडोनिया, तुर्की, साइबेरिया, बूज़नेआ, अल्बानिया, कोसोवो, इटली, स्पेन, बेल्जियम, लाथान्विया, क्रोशिया, ऑस्ट्रिया, हॉलैंड, फ़्रांस, एस्टोनिया हंगरी, मांटेनेगरू से आने वाले मेहमान शामिल हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आमद पर इस प्रोग्राम का आख़िरी सैशन तिलावत क़ुरआन-ए-करीम और इस के जर्मन अनुवाद के साथ शुरू हुआ।

इस के बाद चार बजकर पंद्रह मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी भाषा में भाषण फ़रमाया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल का जलसा सालाना जर्मनी के दूसरे दिन ग़ैर अहमदी जर्मन मेहमानों से ख़िताब

तशह्हुद, ताअव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू। आप सब अमन वस्सलामती से रहें और आप पर अल्लाह तआला के फ़ज़ल हों।

सबसे पहले में अपने ग़ैर अहमदी मेहमानों का दिल्ली शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जो हमारी जमाअत के मेंबर न होने के अतिरिक्त हमारे जलसा सालाना में शामिल हो रहे हैं। आज मैं अपने भाषण में इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत पर मुख़्तसर बात करूँगा और वे असीमित प्रयासों पर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने संसार में अमन क़ायम करने के लिए कीं, उन पर रोशनी डालूँगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सम्भव है कि यह सुनकर आप हैरान हों कि आजकल तो बहुत से तथाकथित मुस्लमान संसार का अमन तबाह कर रहे हैं और अपने इंतहापसंद कर्यो को क़ुरआन-ए-करीम और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात से मंसूब कर रहे हैं। जहां वह अत्यधिक निर्दयता से फ़साद और दहश्त फैला रहे हैं वहां यह भी दावा कर रहे हैं कि उनके आमाल इस्लाम की सच्ची शिक्षाएं पर आधारित हैं।

(हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के भाषण का मुकम्मल मतन इन शा अल्लाह आइन्दा किसी अंक में प्रकाशित होगा)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण एक बजकर 25 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद मेम्बरात लजना और नास्रात के विभिन्न समूहों ने अरबी, उर्दू, जर्मन, स्पेनिश, तुर्की, इंग्लिश, बंगला, कश्मीरी और पंजाबी भाषा में नज़्में और तराने प्रस्तुत किए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कम आयु वाले बच्चों की मारकी में भी तशरीफ़ ले गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ को अपने मध्य पा कर महिलाओं और बच्चों की ख़ुशी असीमत थी। इस मारकी में भी प्यारे आक़ा की सेवा में दुआइया नज़्में और तराने प्रस्तुत किए गए।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दो बजे मर्दाना जलसा गाह में पधारे और ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें जमा करके पढ़ाई और नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान में तशरीफ़ ले गए।

प्रोग्राम के अनुसार चार बजे दोपहर को सय्यदना हज़रत अमीर अलममनीन ख़लीफ़उल-मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जर्मन मेहमानों के साथ एक प्रोग्राम में शामिल होने के लिए मर्दाना जलसा गाह पधारे। जर्मनी के विभिन्न शहरों और इलाक़ों से आने वाले जर्मन मेहमानों के साथ यह प्रोग्राम कुछ समय पहले से था।

इस प्रोग्राम में शामिल होने वाले मेहमानों की संख्या 1488 थी। जर्मनी में आबाद विभिन्न क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले 445 मेहमान इस प्रोग्राम में शामिल हुए। इस के अतिरिक्त विभिन्न अरब देशों के 218 मेहमान शामिल हुए।

इसके अतिरिक्त बलग़ारिया, मेसीडोनिया, तुर्की, साइबेरिया, बूज़नेआ, अल्बानिया, कोसोवो, इटली, स्पेन, बेल्जियम, लाथान्विया, क्रोशिया, ऑस्ट्रिया, हॉलैंड, फ़्रांस, एस्टोनिया हंगरी, मांटेनेगरू से आने वाले मेहमान शामिल हुए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की आमद पर इस प्रोग्राम का आख़िरी सैशन तिलावत क़ुरआन-ए-करीम और इस के जर्मन अनुवाद के साथ शुरू हुआ।

इस के बाद चार बजकर पंद्रह मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी भाषा में भाषण फ़रमाया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल का जलसा सालाना जर्मनी के दूसरे दिन ग़ैर अहमदी जर्मन मेहमानों से ख़िताब

तशह्हुद, ताअव्वुज़ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातहू। आप सब अमन वस्सलामती से रहें और आप पर अल्लाह तआला के फ़ज़ल हों।

सबसे पहले में अपने ग़ैर अहमदी मेहमानों का दिल्ली शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जो हमारी जमाअत के मेंबर न होने के अतिरिक्त हमारे जलसा सालाना में शामिल हो रहे हैं। आज मैं अपने भाषण में इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

अब ख़िलाफ़त इसी तरह जारी रहनी है जिस तरह अल्लाह तआला ने फ़ैसला फ़र्मा दिया है

ज़हूर-ए-क़ुदरत-ए-सानिया अर्थात ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया की बरकत से जमाअत अहमदिया मुस्लिमा पर पिछले 113 वर्षों के समय में नाज़िल होने वाले अल्लाह तआला के फ़ज़लों के दृश्यों की एक झलक

अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण फ़रमांबर्दारी तो तब होगी, हार्दिक संतुष्टि और शांति तो तब मिलेगा जब हमारा हर कार्य केवल और केवल ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को हासिल करने के लिए होगा

जो ख़ालिस हो कर ख़िलाफ़त के आज्ञाकारी और फ़रमांबर्दार होंगे यही लोग हक़ीक़ी रंग में ख़िलाफ़त से प्रेम का ताल्लुक़ रखने वाले हैं, ख़िलाफ़त की रक्षा करने वाले हैं और ख़िलाफ़त उनकी रक्षा करने वाली है, ख़लीफ़ा वक़्त की दुआएं उनके साथ होंगी उनकी तकलीफ़ें ख़लीफ़ा वक़्त को उन के लिए दुआएं करने की तरफ़ आकर्षित करने वाली होंगी

यह वह हक़ीक़ी ख़िलाफ़त है जिसमें जमाअत और ख़लीफ़-ए-वक़्त का सम्बन्ध ख़ुदा तआला की प्रसन्नता की प्राप्ति के लिए है और यही वह ख़िलाफ़त है जो सम्मान और शांति का कारण है

हर अहमदी का हर क्षण जहां अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी में गुज़रना चाहीए कि उसने हमें ख़िलाफ़त की नेअमत से नवाज़ा है वहां अपने जायज़े लेते हुए भी गुज़रना चाहीए कि क्या हम अल्लाह तआला के आदेशों को पूरा कर रहे हैं?

हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार और अल्लाह तआला ने जो आप से वादा किया था उसके अनुसार पिछले 113 वर्षों से अल्लाह तआला के फ़ज़लों के प्रत्येक शब्द-शब्द पूरा होता देख रहे हैं

बैअत वही है जिसमें पूर्ण इताअत की जाए और जिसमें ख़लीफ़ा के किसी एक हुक्म से भी इंकार न किया जाए

हर अवसर पर इस महान ख़लीफ़ा ने जमाअत की कश्ती को अल्लाह तआला की मार्गदर्शन तथा सहायता के साथ सफ़लता की मंज़िलों तक पहुंचाया और महफ़ूज़ रखा

अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ क़ायम करने के लिए एक नया रस्ता भी समझा दिया है

जो ऑनलाइन मुलाक़ात या वर्चूअल मुलाक़ात के द्वारा से इस कोविड की बीमारी की वजह से सामने आया, इस के द्वारा से मीटिंगें भी हो रही हैं, मुलाक़ातें भी हो रही हैं

जिस से सीधे जमाअतों से समपर्क हो रहा है, लोग ख़लीफ़ा वक़्त से सीधे मार्गदर्शन प्राप्त रहे हैं, मैं यहां लंदन से कभी अफ़्रीक़ा के किसी मुल्क से, कभी इंडोनेशिया से, कभी आस्ट्रेलिया से, कभी अमरीका से मुलाक़ात कर लेता हूँ तो ये सब ख़ुदा तआला की सहायता के दृश्य हैं

हमें कभी नहीं भूलना चाहीए कि अल्लाह तआला जो अपने फ़ज़लों के नज़्ज़ारे दिखा रहा है और ख़िलाफ़त के इनाम से जो हमें नवाज़ा हुआ है इसका हमने हमेशा हक़ अदा करने वाला बनना है ताकि क़ियामत तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार हम इस नेअमत से फ़ायदा उठाते रहें

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 मई 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّا كَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

وَعَدَ اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ۚ يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْـًٔا ۚ وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ○ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ○

(सुरः अल्नूर आयत :56 - 57)

इन आयतों का अनुवाद है कि तुम में से जो लोग ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए उनसे अल्लाह ने वक्का वादा किया है कि उन्हें ज़रूर ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाएगा जैसा कि उसने उनसे पहले लोगों को ख़लीफ़ा बनाया और उनके लिए उनके दीन को, जो उसने उनके लिए पसंद किया, ज़रूर सम्मान अता करेगा और उनकी भय की अवस्था के बाद ज़रूर उन्हें अमन की हालत में बदल देगा। वे मेरी इबादत करेंगे। मेरे साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे। और जो उस के बाद भी नाशुक्री करे तो यही वही लोग हैं जो नाफ़रमान हैं। और नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात अदा करो और रसूल की इताअत करो ताकि तुम पर रहम किया जाए।

कल 27 मई थी जिसे हम ख़िलाफ़त के दिन के नाम से याद रखते हैं। ख़िलाफ़त के दिन की मुनासबत और हवाले से जमाअत में जल्से भी आयोजित होते हैं ताकि जमाअत की तारीख़ और ख़िलाफ़त के हवाले से अपनी ज़िम्मेदारियों से हम अवगत रहें और ख़िलाफ़त की बैअत में आने के बाद इन ज़िम्मेदारियों को अदा करने वाले बनें ताकि अल्लाह तआला के फ़ज़लों के वारिस बनते रहें। अल्लाह तआला ने हम पर जो एहसान किया है कि हमने इस ज़माने में अल्लाह तआला के भेजे हुए फ़िरिस्तादे को माना जो उसने इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा के बताने के लिए हम में भेजा और फिर उस के बाद ख़िलाफ़त की बैअत में आए ताकि इस शिक्षा को अपने ऊपर भी लागू करें जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताई और आगे दुनिया में फैलाते भी चले जाएं। अतः ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया से जुड़ना हर अहमदी पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी डालता है। यदि हम इस ज़िम्मेदारी को अदा करेंगे तो तभी हम इस एहसान का हक़ अदा कर सकते हैं जो अल्लाह तआला ने हम पर किया।

यह आयात जो मैं ने तिलावत की हैं इस में जहां अल्लाह तआला ने सम्मान अता फ़रमाने, भय की अवस्था से शांति में आने का वादा किया है वहां यह वादा इस शर्त के साथ है कि मज़बूत ईमान वाले हो, नेक-आमाल बजा लाने वाले बनों, इबादत का हक़ अदा करने वाले हो अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराने वाले न हो, किसी भी किस्म का शिर्क का पहलू तुम्हारे अन्दर न हो और उन चीज़ों के हासिल करने के लिए अल्लाह तआला की इबादत और नमाज़ बहुत आवश्यक है। नमाज़ जो अल्लाह तआला ने इबादत का तरीक़ा बताया है, इन नमाज़ों की अदायगी करने वाले बनों। अल्लाह की राह में ख़र्च करना बहुत आवश्यक है। अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाले बनों और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इताअत अत्यधिक आवश्यक है। उनके हर हुक्म को मानने वाले बनों।

अतः ये बातें जब हम याद रखेंगे और अपनी ज़िंदगीयों को इस के अनुसार ढालने की कोशिश करेंगे, अपना अह्द जो हम ने किया है कि दीन को दुनिया पर प्राथमिकता देंगे इस पर हक़ीक़ी रूह के साथ अमल करने की कोशिश करेंगे तो फिर ही हम अल्लाह तआला के इन इनामों से हिस्सा लेने वाले होंगे जिस का वादा अल्लाह तआला ने फ़रमाया है और तभी हम ख़िलाफ़त के इनाम से हक़ीक़ी लाभ

पाने वाले होंगे। अत: यह आयत मोमिनों के लिए एक बहुत बड़ी ख़ुशख़बरी है लेकिन साथ ही हमारे लिए फ़िक्र का स्थान भी है क्योंकि जो शरायत हैं यदि इस पर पूरा नहीं उतर रहे तो फिर उस इनाम से हक़ीक़ी तौर पर फ़ैज़ नहीं प्राप्त कर सकते। यदि नमाज़, ज़कात, अल्लाह के हक़ूक़ की अदायगी नहीं, अल्लाह के बन्दों के हक़ूक़ की अदायगी नहीं तो फिर जैसा कि वर्णन हुआ अल्लाह तआला के रहम और फ़ज़ल को प्राप्त करने वाले नहीं बन सकते। अत: केवल अपनी तारीख़ से वाक़फ़ीयत हासिल कर लेना और ख़िलाफ़त का दिन मना लेना काफ़ी नहीं है जब तक हम हक़ीक़ी इबादत करने वाले नहीं बन जाते। अत: जब तक हम अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले नहीं बन जाते, बंदों के हक़ अदा करने वाले और अल्लाह तआला का हक़ अदा करने वाले नहीं बन जाते, उस वक़्त तक हमारा यह ख़िलाफ़त का दिन मना लेना कोई फ़ायदा नहीं दे सकता। अत: हमें अपने जायज़े लेने की ज़रूरत है कि हमारी ईमानी हालत क्या है? क्या हम में अल्लाह तआला का भय और ख़शीयत है? क्या हम संयम की बारीक राहों पर चलने वाले हैं? क्या हम अल्लाह तआला से हर चीज़ से ज़्यादा मुहब्बत करने वाले हैं? क्या हम अल्लाह तआला और उसके रसूल की पूर्ण फ़रमांबर्दारी करने वाले हैं? और फिर साथ ही हमारी नज़र अपने कर्मों की तरफ़ फिरने वाली होनी चाहिए कि क्या हमारा हर कर्म इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा के अनुसार है? हमारे कर्म कहीं दिखावे के कार्य तो नहीं? हमारी नमाज़ें कहीं दिखावे की नमाज़ें तो नहीं? हमारा माल ख़र्च करना, ज़कात देना कहीं दिखावा तो नहीं? हमारे रोज़े कहीं दिखावे के रोज़े तो नहीं? हमारे हज केवल हाजी कहलाने के लिए तो नहीं? अल्लाह तआला और उसके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पूर्ण फ़रमांबर्दारी तो तब होगी, हार्दिक संतुष्टि और शांति तो तब मिलेगा जब हमारा हर कार्य केवल और केवल ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को हासिल करने के लिए होगा और तभी वे मुआशरा ख़िलाफ़त के अधीन क़ायम होगा जब हमारा हर अमल अल्लाह के हक़ूक़ और अल्लाह के बन्दों के हक़ूक़ की अदायगी का हक़ अदा करने वाला होगा। अत: केवल ज़बानी बातें नहीं बल्कि अल्लाह तआला के इस इरशाद को हमेशा सामने रखना होगा कि वह ईमान लाने वाले इस से फ़ैज़ उठाएँगे जिनके अमले सालेह होंगे।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते कि "क़ुरआन शरीफ़ में अल्लाह तआला ने ईमान के साथ अमले सालेह (पवित्र कर्मों) भी रखा है। अमले सालेह (पवित्र कर्मों) उसे कहते हैं कि जब एक ज़रा भी फ़साद न हो। याद रखों इन्सान के अमल पर हमेशा चोर पड़ा करते हैं। वह क्या हैं? "वे कौन से चोर हैं? वे ये हैं।'' दिखावा (अर्थात जब इन्सान दिखावे के लिए एक अमल करता है), अभिमान, (एक अमल करके कोई नेकी कर ली तो फिर दिल में बड़ा ख़ुश होता है कि मैंने बड़ी नेकी कर ली और किस्म किस्म की बदकारियाँ (जिनको कई बार इन्सान महसूस भी नहीं करता) और गुनाह (हैं) जो उस से होते हैं। इस से आमाल व्यर्थ हो जाते हैं। अमले सालेह वे है जिस में अत्याचार, अभिमान, दिखावा, घमंड, इन्सान के अधिकार नष्ट करने का ख़्याल तक न हो।'' (वे अमले सालेह हैं। ये नहीं कि अमल नहीं किया बल्कि फ़रमाया उनका ख़्याल भी तुम्हारे दिल में न आए तब वे हक़ीक़ी मोमिन बनोगे और अमले सालेह करने वाले कहलाओगे) फ़रमाया "जैसे आख़िरत में अमले सालेह से बचता है वैसे ही दुनिया में भी बचता है।'' फ़रमाया कि "यदि एक आदमी भी पूरे घर में अमले सालेह वाला हो तो सब घर बचा रहता है। समझ लो कि जब तक कि तुम में अमले सालेह न हो केवल मानना फ़ायदा नहीं करता।"

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 274-275)

अत: ईमान के साथ अमले सालेह अत्यधिक आवश्यक शर्त है। फिर फ़रमाया कि अमले सालेह हमारी अपनी तजवीज़ और क़िरदार से नहीं हो सकता। यह नहीं कि हम यह कहते हैं कि अमले सालेह है। असल में आमाले सालिहा वे हैं जिसमें किसी नए का कोई फ़साद न हो क्योंकि सालिह फ़साद के विपरीत है। जैसे आहार पवित्र उस वक़्त होता है कि वे न कच्चा हो न सड़ा हुआ हो और न किसी अदना दर्जा के जिन्स का हो बल्कि ऐसी हो जो फ़ौरन शरीर का हिस्सा हो जाने वाली हो जो जिस्म का हिस्सा बन जाए। वे आहार पवित्र है जिसमें किसी किस्म की कमी न हो। इसी तरह पर आवश्यक है कि अमले सालेह में भी किसी किस्म का फ़साद न हो अर्थात अल्लाह तआला के हुक्म के अनुसार हो। जो अल्लाह ने हुक्म फ़रमाया है उस के अनुसार अमल हो और फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत के अनुसार हो जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने किया और करके दिखाया और फ़रमाया उसके अनुसार हो और फिर न इस में किसी किस्म की सुस्ती हो। कोई सुस्ती नहीं होनी चाहिए। इस अमल को बजा लाने में न अभिमान हो न दिखावा हो न वे अपनी तजवीज़ से हो जब ऐसा अमल हो तो वे अमले सालेह कहलाता है। स्वयं अपनी तज्वीज़ें न बनाते रहो। अमले सालेह के लिए स्वयं व्याख्याएँ न करते रहो। स्वयं यह न कहते रहो कि इस से यह उद्देश्य है और यह उद्देश्य है बल्कि शब्द शब्द अल्लाह तआला और उसके रसूल के हुक्मों पर अमल करो तो अमले सालेह होगा और फ़रमाया कि यह किबरियते अहमर है।

(उद्धरित मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 425-426)

यह बहुत बड़ी और अहम चीज़ है। यदि इस हालत को हासिल कर लिया तो समझो कि अल्लाह तआला के वादे से फ़ैज़ उठाने वाले बन गए। और यही वे लोग हैं जो ख़िलाफ़त अहमदिया के क़ायम रखने के अह्द को भी पूरा करने वाले हैं न कि वे जो जब अपने मुफ़ाद सामने आएं तो अमले सालेह की स्वयं व्याख्या करने लग जाएं। प्रसिद्ध फ़ैसलों की स्वयं तफ़सीर करने लग जाएं। उनकी अभिमान उन्हें अपने क़बज़ा में ले-ले। ऐसे लोग जो हैं उन्हें उनका ख़िलाफ़त से जुड़ने का ऐलान कुछ फ़ायदा नहीं दे सकता। निसंदेह वे कहते रहें हम ख़िलाफ़त से जड़े हुए हैं। जो ख़ालिस हो कर ख़िलाफ़त के आज्ञाकारी और फ़रमांबर्दार होंगे यही लोग हक़ीक़ी रंग में ख़िलाफ़त से वफ़ा का ताल्लुक़ रखने वाले हैं। ख़िलाफ़त की हिफ़ाज़त करने वाले हैं और ख़िलाफ़त उनकी हिफ़ाज़त करने वाली है। ख़लीफ़ा वक़्त की दुआएं उनके साथ होंगी। उनकी तकलीफ़ें ख़लीफ़ा वक़्त को उनके लिए दुआएं करने की तरफ़ आकर्षित करने वाली होंगी। ये आमाल सालहा बजा लाने वाले ही हैं जिनका ख़िलाफ़त से रिश्ता और ख़िलाफ़त का उनसे रिश्ता ख़ुदा तआला की प्रसन्नता की ख़ातिर है।

अत: यह वह हक़ीक़ी ख़िलाफ़त है जिसमें जमाअत और ख़लीफ़ वक़्त का ताल्लुक़ ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के हुसूल के लिए है और यही वह ख़िलाफ़त है जो सम्मान और शांति काकारण है। यही वे लोग और ख़लीफ़ वक़्त का ताल्लुक़ है जो दोनों को अल्लाह तआला के फ़ज़लों को हासिल करने वाला बनाता है। दूसरे मुस्लमान ख़िलाफ़त क़ायम करना चाहते हैं लेकिन दुनियावी माध्यमों से, दुनियावी तदबीरों से। और ये हीले और तदबीरें उन्हें कभी फ़ायदा नहीं दे सकतीं और न इस तरह ख़िलाफ़त क़ायम हो सकती है जितना चाहे ये कोशिश कर लें। अब ख़िलाफ़त इसी तरह जारी रहनी है जिस तरह अल्लाह तआला ने फ़ैसला फ़र्मा दिया है। अत: जहां इस बात से हमारे अंदर शुक्रगुज़ारी की भावनाएं पैदा होने चाहिऐं और अल्लाह तआला के आगे झुकने वाला होना चाहीए कि उसने हमें ख़िलाफ़त की नेमत से नवाज़ा है वहां हमें हर वक़त अल्लाह तआला का भय दिल में रखते हुए अपने आमाल पर नज़र रखने की ज़रूरत है कि क्या यह अल्लाह तआला और उसके रसूल के हुक्मों के अनुसार हैं? क्या हमारी अल्लाह के हक़ूक़ की अदायगी और अल्लाह के बन्दों के हक़ूक़ की अदायगी के मयार अल्लाह तआला के बताए हुए मयार के अनुसार हैं?

अत: हर अहमदी का हर क्षण जहां अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी में गुज़रना चाहिए कि उसने हमें ख़िलाफ़त की नेमत से नवाज़ा है वहां अपने जायज़े लेते हुए भी गुज़रना चाहिए कि क्या हम अल्लाह तआला के हुक्मों पर चल रहे हैं? और जब इस सोच के साथ ज़िंदगी गुज़ारेंगे और फिर अपने कार्यों को भी इस के अनुसार करेंगे और ख़िलाफ़त के क़ायम रहने के लिए दुआएं भी कर रहे होंगे तो फिर अल्लाह तआला के इनामों के वारिस भी बनते चले जाऐंगे। यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें बताया है कि अल्लाह तआला ने आप को तसल्ली भी दी कि ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी रहेगा और अल्लाह तआला ने आप जो ख़ुशख़बरियाँ दी हैं वे ज़रूर पूरी होंगी यदि हम इन शरायत को पूरा करने वाले हैं। इस लिए रिसाला अल् वसीयत में आप ने ख़िलाफ़त के निज़ाम के बारे में बड़ी तफ़सील से वर्णन फ़रमाया है।

आप फ़रमाते हैं कि "यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है और जब से कि उसने इन्सान को ज़मीन में पैदा किया हमेशा इस सुन्नत को वह ज़ाहिर करता रहा है कि वह अपने नबियों और रसूलों की मदद करता है और उनको विजय प्रदान करता है जैसा कि वह फ़रमाता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغۡلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیۡ (अल्- मुजादला : 22) (ख़ुदा ने लिख रखा है कि वह और उस के नबी ग़ालिब रहेंगे। इसी से) और ग़लबा से मुराद यह है कि जैसा कि रसूलों और नबियों का यह उद्देश्य होता है कि ख़ुदा की हुज्जत ज़मीन पर पूरी हो जाए और उस का मुक़ाबला कोई न कर सके ईसी तरह ख़ुदा तआला मज़बूत निशानों के साथ उनकी सच्चाई ज़ाहिर कर देता है और जिस रास्तबाज़ी को वे दुनिया में फैलाना चाहते हैं उस का बीजारोपण उन्हीं के हाथ से

कर देता है लेकिन उस की पूरी तकमील उनके हाथ से नहीं करता बल्कि ऐसे वक़्त में उनको वफ़ात देकर जो बज़ाहिर एक नाकामी का भय अपने साथ रखता है मुख़ालिफ़ों को हंसी और ठट्ठे और कटाक्ष और व्यंग का अवसर दे देता है और जब वे हंसी ठट्ठा कर चुके होते हैं तो फिर एक दूसरा हाथ अपनी क़ुदरत का दिखाता है और ऐसे अस्बाब पैदा कर देता है जिनके द्वारा से वे मक़ासिद जो किसी क़दर अधूरे रह गए थे अपने कमाल को पहुंचते हैं।"

(रिसाला अल्- वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 304-305)

हम देखते हैं कि जहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त ने हर अहमदी को हिला कर रख दिया वहां ग़ैरों ने भी ख़ुशी के बड़े ढोल वजाए। आप अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर ऐसी बेहूदा बातें की गईं कि इन्सानियत को उनके बारे में सुन कर शर्म आती है। वे वे बेहूदा बातें की गईं कि इन्सान हैरान होता है कि अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम लेने वाले इस हद तक भी गिर सकते हैं। यह समस्त बेहूदा बातें तो मुझे बयान करने की ज़रूरत नहीं लेकिन उनकी कुछ दूसरी कोशिशों का वर्णन कर देता हूँ कि किस तरह उन्होंने आप अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद कोशिश की कि जमाअत को ख़त्म किया जाए। जमाअत के शीराज़े के बिखरने के बारे में और अहमदियों को अहमदियत से तौबा करने के बारे में उन्हों ने झूठी ख़बरें किस तरह फैलाईं। उदाहरणत: पीर जमाअत अली शाह के मुरीदों ने कहा कि मिर्ज़ाई तौबा कर के बैअत कर रहे हैं।

(उद्धरित तारीख़ अहमदियत भाग पृष्ठ 204)

अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात के बाद अहमदियत से तौबा कर के अब उनके अंदर शामिल हो रहे हैं। ख़्वाजा हसन निज़ामी साहिब अहमदियों को मश्वरा देते हुए यह कहते हैं कि अब मिर्ज़ा साहिब के दावा मसीहीयत और महिदयत से अहमदी साफ़ इन्कार कर दें अन्यथा अंदेशा है कि मिर्ज़ा साहिब जैसे समझदार और मुंतज़िम व्यक्ति की अनुपस्थिति के कारण अहमदिया जमाअत मुख़ालिफ़ीन की शोरिश को बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और इस का शीराज़ा बिखर जाएगा।

(उद्धरित तारीख़ अहमदियत भाग तीन, पृष्ठ 206)

बड़े राजनीतिक अंदाज़ में अपनी तरफ़ से बड़ी नरम ज़बान में यह मश्वरा दे रहे हैं। यह साहिब संजीदा स्वभाव के थे बज़ाहिर। उन्होंने बड़े सादा बन कर और हमदर्द बन कर अहमदियों को मश्वरा दिया है कि मिर्ज़ा साहिब तो अब फ़ौत हो गए, अब तुम्हें कोई नहीं सँभाल सकता इसलिए छोड़ो अहमदियत को और आओ और हमारे साथ शामिल हो जाओ लेकिन उनको नहीं पता था उनकी आँख इन वादों की शान को नहीं देख सकती थी जो अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए थे कि "मैं तेरे साथ और तेरे समस्त प्यारों के साथ हूँ।''

(अल् हकम भाग 11 नंबर 46 तिथी 24 दिसंबर 1907 ई. पृष्ठ 4)

अल्लाह तआला ने इल्हाम के द्वारा आप अलैहिस्सलाम को फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला ने वादा फ़र्मा कर तसल्ली दी थी कि आप अलैहिस्सलाम के बाद आप की ख़िलाफ़त का सिलसिला शुरू होगा और जो वादे और भविष्यवानियाँ हैं ज़रूर पूरी होंगी। आप अलैहिस्सलाम ने वाज़िह फ़रमाया कि यह नबियों की जमाअत दूसरी क़ुदरत को भी देखती है। यहां नबी की यह मिसाल देकर उन लोगों को भी यह उत्तर दे दिया जो कुछ कमज़ोर अहमदी लोग कई दफ़ा यह कहते हुए झुकते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम नबी थे। यहां इस का भी जवाब आ गया। आप अलैहिस्सलाम ने स्वयं यह फ़र्मा दिया कि मेरी जमाअत नबी की जमाअत है और मैं नबी हूँ और आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नबियों की जमाअत दूसरी क़ुदरत को भी देखती है और यही तुम लोग भी देखोगे जो ईमान पर क़ायम रहोगे और पवित्र कर्म करोगे।

इस लिए आप दूसरी क़ुदरत के जारी रखने के बारे में हैं: "उद्देश्य" अल्लाह तआला "दो प्रकार की क़ुदरत प्रकट करता है। (1 प्रथम स्वयं नबियों के हाथ से अपनी क़ुदरत का हाथ दिखाता है। (2 दूसरे ऐसे समय में जब नबी के देहान्त के पश्चात मुश्किलात का सामना पैदा हो जाता है और दुश्मन ज़ोर में आ जाते हैं और समझते हैं कि अब काम बिगड़ गया और विश्वास कर लेते हैं कि अब यह जमाअत मिट जाएगी और स्वयं जमाअत के लोग भी चिंता में पड़ जाते हैं और उनकी कमरें टूट जाती हैं और कई अभागे विमुख होने का मार्ग धारण कर लेते हैं। तब ख़ुदा तआला दूसरी बार अपनी ज़बरदस्त क़ुदरत ज़ाहिर करता है और गिरती हुई जमाअत को सँभाल लेता है। अत: वह जो अंत तक धैर्य रखता है ख़ुदा तआला के इस चमत्कार को देखता है जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हु के वक़्त में हुआ जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मौत एक असमय की मौत समझी गई और बहुत से बादियानशीन (वनवासी) अज्ञान विमुख हो गए और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हों भी दुख के कारण दीवानों की तरह हो गए। तब ख़ुदा तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को खड़ा करके दुबारा अपनी क़ुदरत का नमूना दिखाया और इस्लाम को मिटते मिटते थाम लिया और उस वचन को पूरा किया जो फ़रमाया था, وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمۡ دِيۡنَهُمُ الَّذِی ارۡتَضٰى لَهُمۡ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ خَوۡفِهِمۡ اَمۡنًا (नूर : 56) अर्थात ख़ौफ़ के बाद फिर हम उनके पैर जमादेंगे।"

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 304-305)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "अत: हे अज़ीज़ो! जब कि पूर्व समय से अल्ललाह की सुन्नत यही है कि ख़ुदा तआला दो क़ुदरतें दिखलाता है ताकि मुख़ालिफ़ों की दो झूठी ख़ुशीयों को नष्ट कर के दिखाए अत: अब सम्भव नहीं है कि ख़ुदा तआला अपनी पूर्व की सुन्नत को छोड़ देवे। इस लिए तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास वर्णन की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना आवश्यक है और उस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दाइमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक खत्म नहीं होगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं। लेकिन मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन-ए-अहमदिया में वादा है और वह वादा मेरी ज़ात की निसबत नहीं है बल्कि तुम्हारी निसबत वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयाई हैं क़ियामत तक दूसरों पर विजय करूंगा। अत: ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आए ताकि बाद इस के वह दिन आए जो दाइमी वादे का दिन है। वह हमारा ख़ुदा वादों का सच्चा और वफ़ादार और सादिक़ ख़ुदा है। वह सब कुछ तुम्हें दिखाएगा जिसका उसने वादा फ़रमाया जबकि ये दिन दुनिया के आख़िरी दिन हैं और बहुत बलाएँ हैं जिनके आने का समय है पर ज़रूर है कि यह दुनिया क़ायम रहे जब तक वे समस्त बातें पूरी नहीं हो जाएं जिनकी ख़ुदा ने ख़बर दी। मैं ख़ुदा की तरफ़ से एक क़ुदरत के रंग में ज़ाहिर हुआ और मैं ख़ुदा की एक मुजस्सम क़ुदरत हूँ और मेरे बाद कुछ और वजूद होंगे जो दूसरी क़ुदरत का मज़हर होंगे। अत: तुम ख़ुदा की दूसरी क़ुदरत के इंतिज़ार में इकट्ठे हो कर दुआ करते रहो।"

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 305-306)

अत: हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार और अल्लाह तआला ने जो आप अलैहिस्सलाम से वादा किया था उस के अनुसार पिछले 113 वर्षों से अल्लाह तआला के फ़ज़लों के हर शब्द को पूरा होता देख रहे हैं। वही लोग जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वफ़ात पर कहते थे कि उनका सिर कट गया है और अब उनके पास कुछ नहीं रहा। कुछ बातें तो मैंने पहले बयान कीं कि यह छोड़ दें। अब कोई उनको सँभाल नहीं सकेगा।

फिर हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु (प्रथम ख़लीफ़ा) के बारे में अख़बार कर्ज़न गज़्ट ने लिखा कि अब मिर्ज़ाइयों में क्या रह गया है। उनका सिर कट चुका है। हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िलाफ़त के बाद यह लिखा कि एक व्यक्ति जो उनका इमाम बना है इस से और तो कुछ नहीं होगा। हाँ यह कि वह तुम्हें मस्जिद में क़ुरआन सुनाया करेगा। लेकिन इन अक़्ल के अँधों को क्या पता था कि यही तो वह महान काम है जिसके करने के लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपनी नसल में से एक अज़ीम रसूल के आने की दुआ मांगी थी और यही वह महान शरीयत है जिसे लेकर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आए थे और यही वह पूर्ण और मुकम्मल किताब है जिसको पढ़ने और पढ़ाने वाले दुनिया-ओ-आख़िरत में बा-मुराद होते हैं। यही तो वह किताब है जिसकी शिक्षा को फैलाने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आए थे और यही काम है जिसके करने के लिए ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी हुआ है। बहरहाल उनकी यह बात सुनकर हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हुने फ़रमाया कि ख़ुदा करे कि यही हो कि मैं तुम्हें क़ुरआन ही सुनाया करूँ।

(उद्धरित क़ादियान 7 जनवरी 1909 ई. भाग 8 शुमारा नंबर 10, पृष्ठ 5)

यह काम तो हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने किया और ख़ूब किया लेकिन दुश्मन का जो यह ख़्याल था कि अब जमाअत में इंतिज़ामी कमज़ोरियाँ पैदा हो जाएँगी और इस का शीराज़ा बिखर जाएगा इसको देखने की उन्हें हसरत ही रही। हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु ने

मुनाफ़क़ीन और अंजुमन के कुछ बड़े लोगों के उपद्रव को इस सख़्ती से दबाया कि किसी को साहस नहीं हुआ कि किसी किस्म का उपद्रव पैदा कर सके। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त की पहली तक़रीर में फ़रमाया कि "अब तुम्हारी तबीअतों के रुख ख़ाह किसी तरफ़ हों तुम्हें मेरे अहकाम की तामील करनी होगी।" (बदर क़ादियान 2 जून 1908 ई. शुमारा नंबर 22 भाग 7 पृष्ठ 8)

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक अवसर पर मस्जिद मुबारक में बड़े जलाली रंग में तक़रीर करते हुए फ़रमाया कि तुमने अपने अमल से मुझे इतना दुख दिया है कि मैं उस मस्जिद के हिस्से में भी खड़ा नहीं हुआ जो तुम लोगों का बनाया हुआ है बल्कि में अपने मिर्ज़ा की मस्जिद में खड़ा हुआ हूँ अर्थात वह हिस्सा मस्जिद जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वक़्त में इबतिदा में बना हुआ था आप रज़ियल्लाहु अन्हु वहां खड़े थे न कि उस हिस्सा में कि जिसकी बाद में जमाअत के चंदों से एक्सटेंशन हुई। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि मैं तो वहां भी नहीं खड़ा होता। मैं तो असल हिस्सा मस्जिद में खड़ा हूँ जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने का बना हुआ है या आप के इबतिदा में था बाद की एक्सटेंशन नहीं थी। और फ़रमाया कि मेरा फ़ैसला है कि क़ौम और अंजुमन दोनों का ख़लीफ़ा सरदार है और ये दोनों ख़ादिम हैं अर्थात अंजुमन भी, मानने वाले भी ये सब ख़ादिम हैं। अंजुमन मुशीर है। हाँ मुशीर के तौर पर अंजुमन से मश्वरा लिया जाता है और यह मश्वरा भी आवश्यक चीज़ होता है। इसी तरह यह भी फ़रमाया कि जिसने यह लिखा है कि ख़लीफ़ा का काम बैअत लेना है, असल हाकिम अंजुमन है वह तौबा करे। ख़ुदा ने मुझे ख़बर दी है कि यदि इस जमाअत में से कोई तुझे छोड़ कर मुर्तद हो जाएगा तो मैं उस के बदले तुझे एक जमाअत दूँगा। फिर फ़रमाया कि कहा जाता है कि ख़लीफ़ा का काम केवल नमाज़ पढ़ाना या निकाह पढ़ा देना या फिर बैअत ले लेना है। यह काम तो एक मुल्ला भी कर सकता है। इस के लिए ख़लीफ़ा की क्या ज़रूरत है? इस के लिए किसी ख़लीफ़ा की ज़रूरत नहीं। फ़रमाया इस के लिए तो किसी ख़लीफ़ा की ज़रूरत नहीं और मैं इस किस्म की बैअत पर थूकता भी नहीं कि इस तरह की बैअत लूं। बैअत वही है जिस में पूर्ण इताअत की जाए और जिसमें ख़लीफ़ा के किसी एक हुक्म से भी इन्कार न किया जाए।

(उद्धरित तारीख़ अहमदियत भाग 3 पृष्ठ 262)

अत: इस ख़िताब ने जहां मुनाफ़क़ीन के मंसूबे नाकाम-ओ-ना-मुराद कर दिए वहां मुख़ालिफ़ीन के मुँह भी बंद कर दिए और जिस व्यक्ति को बूढ़ा कमज़ोर व्यक्ति समझते थे वह जब ख़ुदा तआला की सहायता से बोला तो ऐसा बोला कि सब झाग की तरह बैठ गए। तालियां करने वाले अपना मुँह छुपाने लगे। मुख़लेसीन जमाअत ने एक नए अज़्म के साथ बैअत का अह्द किया और फिर दुनिया ने देखा कि किस तरह जमाअत तरक़्क़ी की तरफ़ रवाँ-दवाँ हो गई।

फिर जब मार्च 1914 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु का देहान्त हुआ तो उस वक़्त जमाअत में फिर एक भूचाल की अवस्था पैदा हुई। अंजुमन के जो बड़े अंजुमन को ही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का असल जांनशीन मनवाने पर तुले हुए थे और हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु की वजह से ख़ामोश हो गए थे फिर सिर उठाने लगे। इसी तरह मुनाफ़क़ीन ने भी सिर उठाने की कोशिश की लेकिन फिर अल्लाह तआला की मदद और नुसरत का हाथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए हुए वादे के अनुसार ख़िलाफ़त के मन्सब को सँभालने का माध्यम बना। अंजुमन के बड़े लोगों को ख़तरा था कि जमाअत हज़रत मिर्ज़ा बशीर उद्दीन महमूद अहमद साहिब को अगला ख़लीफ़ा निर्धारित कर लेगी। इसलिए उन्होंने बहुत कोशिश की कि ख़लीफ़ा न हो। किसी न किसी तरह यह बात टल जाए चाहे कुछ अरसे के लिए ही सही। हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब ने साफ़ कहा कि ख़लीफ़ा तो बहरहाल होना चाहिए लेकिन साथ ही यह भी मैं वाज़िह कर देता हूँ कि मुझे कोई शौक़ नहीं कि मैं ख़लीफ़ा बनूं। तुम जिसे चाहो ख़लीफ़ा बना लो में और मेरा पूरा ख़ानदान उस की सच्चे दिल से बैअत कर लेंगे। लेकिन ये लोग जो अपने आपको सबसे बुद्धिमान समझते थे और उनको ख़तरा भी था कि फ़ैसला तो उनके हक़ में ही होना है, जो केवल शक्ति चाहने वाले थे वे ये बात नहीं माने। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब ने जब कहा कि मैं किसी की भी बैअत करने के लिए तैयार हूँ तुम जिसको मुक़र्रर करो लेकिन ख़लीफ़ा बहरहाल होना चाहिए तो वे ये बात नहीं माने। बहरहाल फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की वसीयत के अनुसार मोमिनीन की जमाअत मस्जिद नूर में इकट्ठी हुई और ये कम-ओ-बेश तक़रीबन दो हज़ार या ज़्यादा लोग होंगे। सबने हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद को अपना ख़लीफ़ा निर्धारित कर लिया और लोग एक दूसरे के सिरों पर से फलांगते हुए बैअत के लिए आगे बढ़ रहे थे। देखने वाले लिखते हैं कि लगता था कि फ़रिश्ते लोगों को पकड़ पकड़ कर अल्लाह तआला के इस इंतिख़ाब की बैअत में ला रहे हैं।

(उद्धरित सिलसिला अहमदिया भाग पृष्ठ 330-331)

आख़िर ये सब कुछ देखकर अंजुमन के कुछ बड़े लीडरों, उनमें से जो बड़े बड़े कुछ लोग थे, अंजुमन का समस्त ख़ज़ाना लेकर वहां से ग़ायब हो गए लेकिन दुनिया ने देखा कि किस तरह ख़िलाफ़त अहमदिया के द्वारा अल्लाह तआला ने जमाअत को सम्मान अता फ़रमाया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हु का बावन वर्षों समय ख़िलाफ़त इस बात की गवाह है कि वह नौजवान जिसके सपुर्द अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त की बागडोर की, किस तेज़ी से जमाअत को लेकर तरक़्क़ी की मंज़िलों पर क़दम मारते हुए बढ़ता चला गया। वे लोग जो अंजुमन का ख़ज़ाना ख़ाली कर के गए थे और ये दावा करते थे कि क़ादियान में अब ईसाइयों की हुकूमत होगी। हम तो यह देख रहे हैं कि आज उनकी नसलें देख रही हैं कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया के साथ जो अल्लाह तआला का समर्थन हैं वे हमें ईसाइयों को मसीह मुहम्मदी के झंडे तले जमा होते दिखा रहा हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने दुनिया के बेशुमार मुल्कों में मिशन खोले। अफ्रीक़ा में ईसाई मुबल्लेग़ीन को अहमदी मुबल्लेग़ीन के सामने खड़े होने का साहस नहीं होता था। आख़िर उन्हें स्वीकार करना पड़ा कि ईसाइयत के फैलाओ में अहमदियत एक बहुत बड़ी रोक है और इस का उनकी रिपोर्टों में वर्णन है। उद्देश्य हम देखते हैं कि क़ादियान पर हमले के मंसूबे हों या तब्लीग़ का मैदान हो या हिज्रत का वक़्त हो हर अवसर पर इस महान ख़लीफ़ा ने जमाअत की कश्ती को अल्लाह तआला के मार्गदर्शन तथा सहायता के साथ सफ़लता की मंज़िलों तक पहुंचाया और महफ़ूज़ रखा।

आख़िर इलाही तक़दीर के अनुसार नवंबर 1965 ई. में जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु की वफ़ात हुई तो इलाही वादों के अनुसार अल्लाह तआला ने क़ुदरत-ए-सानिया के तीसरे मज़हर को खड़ा किया। फिर जमाअत को अल्लाह तआला ने ख़ौफ़ से शांति में लाते हुए हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला के हाथ पर इकट्ठा कर दिया और फिर जमाअत तरक़्क़ी की मंज़िलों पर क़दम मारने लगी। अफ्रीक़ा में स्कूल और हस्पताल जारी होने का एक नया दौर शुरू हुआ। अहमदियत के अफ्रीक़ा में परिचय का एक नया दौर शुरू हुआ। दुनिया में जमाअत का परिचय बढ़ने लगा। ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला का अफ्रीक़ा के कुछ देशों का पहला दौरा हुआ जिस के ग़ैरमामूली असरात नज़र आने लगे। किसी भी ख़लीफ़ा का अफ्रीक़ा के देशों में यह पहला दौरा था जो ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने किया। 1974 ई. में हुकूमत-ए-वक़्त ने अहमदियों के ख़िलाफ़ एक सख़्त मुहिम चला कर अहमदियों के ख़िलाफ़ ग़ैर मुस्लिम होने का क़ानून पास किया तो ख़िलाफ़त की ढाल के पीछे इस ख़ौफ़नाक हमले से भी जमाअत सफ़ल हो कर निकली और दुश्मन की जमाअत की तरक़्क़ी को रोकने की कोशिश नाकाम-ओ-ना-मुराद हुई। दुश्मन जो जमाअत के हाथों में मांगें वाला कटोरा देने की बातें करते थे उस की ख़ाहिश मिट्टी में मिल गई और अल्लाह तआला ने माली सहूलत के नए नए रस्ते खोल दिए। लोगों को, जमाअत के लोगों को जो आर्थिक दृष्टि से बिल्कुल ही करीपल (cripple) कर दिया गया था या कोशिश की थी कि ख़त्म कर दें उन लोगों को अल्लाह तआला ने माली में वृद्धि भी अता फ़रमाई और फिर बाहर निकलने के रस्ते भी खोले। अत: वे लोग जो 74 ई. के बाद जर्मनी में और कुछ दूसरी जगहों पर बाहर आए हैं उनको माली में वृद्धि मिली है उनको ये बातें अपनी नसलों और औलाद को भी बितानी चाहिऐं कि किस तरह दुश्मन ने एक कोशिश की थी और किस तरह ख़िलाफ़त के साए तले फिर अल्लाह तआला ने उनके लिए नए रस्ते खोले और पहले से हज़ारों गुना ज़्यादा माली में वृद्धि अता फ़र्मा दी।

फिर जून 1982 ई. में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला भी हम से विदा हुए तो अल्लाह तआला ने फिर अपने वादे के अनुसार हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला द्वारा जमाअत के ख़ौफ़ को शांति में बदला। दुश्मन जमाअत की तरक़्क़ी को देख कर उस वक़्त बद हवास हो चुका था। उसने नए सिरे से हमले की योजना बनाई और कोशिश की कि ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया को व्यर्थ अंग की भांति कर दिया जाए। यहां दुश्मन ने अपनी सीमी में सिर काटने की कोशिश की लेकिन इन जाहिलों और अक़्ल के अँधों

को क्या पिता कि ख़ुदा तआला के मंसूबे क्या हैं ग़ैरमामूली मार्गदर्शन तथा सहायता के साथ अल्लाह तआला ने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला को पाकिस्तान से हिज्रत करवाई और दुश्मन देखता रह गया और फिर हिज्रत के बाद ख़िलाफ़त-ए-राबिया में सफ़लता का एक नया दौर शुरू हुआ और सैटेलाइट के द्वारा ख़लीफ़ा वक़्त और अहमदियत और हक़ीक़ी इस्लाम का संदेश अहमदियों के घरों के साथ साथ ग़ैरों के घरों में और हर मुल्क में पहुंचना शुरू हो गया और तब्लीग़ के नए रस्ते खुले। कई मुल्कों में अहमदियत के पौधे लगे और हक़ीक़ी इस्लाम की शिक्षा फैलनी शुरू हुई। क़ुरआन-ए-करीम का प्रचार प्रसार पहले से बढ़ गया। इस के अनुवाद नई नई भाषाओँ में शुरू हुए।

फिर इलाही तक़दीर के अनुसार अप्रैल 2003 ई. में ख़लीफ़तुल-मसीह अल् राबे का देहान्त हुआ तो फिर जमाअत के लिए एक बहुत बड़ा धक्का था और दुश्मन के ख़्याल में उन के लिए अहमदियत को ख़त्म करने का एक बहुत बेहतरीन अवसर था लेकिन अल्लाह तआला ने जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से वादा फ़रमाया है उसने एक दफ़ा फिर जमाअत को सँभाला और ऐसा सँभाला कि मुख़ालिफ़ मौलवी भी कहने लगे कि बावजूद इस के कि हम तुम्हें सच्चा नहीं समझते लेकिन हम यह देख रहे हैं कि ख़ुदा तआला के कर्मों की शहादत तुम्हारे साथ है। लेकिन यह मानने के बावजूद कि ख़ुदा तआला के कर्मों की शहादत हमारे साथ है फिर भी मानने को तैयार नहीं। मोमिनीन की दुआओं को अल्लाह तआला ने सुना और भय की अवस्था को शांति में बदल दिया और इस्लाम के इतिहास में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा का समय शुरू हुआ।

इस्लाम के इबतिदाई दौर में यदि ख़िलाफ़त-ए-राशिदा चार ख़िलाफ़तों तक सीमित थी तो वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार थी और अब जो ख़िलाफ़त-ए-ख़ामसा का दौर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा से शुरू हुआ तो यह भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आने के बाद जिस तरह इस्लाम की तारीख़ में बहुत से नए अध्याय खुले हैं ख़िलाफ़त ख़ामसा भी उन्ही का एक हिस्सा है। दुश्मन समझता था कि अब तो जमाअत की क़ियादत इतने मज़बूत हाथों में नहीं है लेकिन उनको क्या पता कि असल हाथ तो ख़ुदा तआला का हाथ है जो जिसकी ताईद में और जिसके साथ हो उसे मज़बूत कर देता है। आज दुश्मन की द्वेष की आँख पहले से बढ़कर जमाअत की प्रगति को देख रही है। जमाअत का जो परिचय और दुनिया में इस का ग़ैरमामूली तौर पर इज़हार इस समय में, हर वर्ग में और हर स्तर पर हुआ है यह ग़ैरमामूली है। मैं तो एक बहुत कमज़ोर इन्सान हूँ मेरी किसी ख़ूबी की वजह से यह तरक़्क़ी नहीं हो रही। दुनिया की हुकूमतों के बड़े लोगों और ऐवानों में जमाअत-ए-अहमदिया का परिचय हो रहा है तो यह केवल् और केवल ख़ुदा तआला के फ़ज़लों और इस के हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से किए गए वादों की वजह से हो रहा है, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार हो रहा है। हर-रोज़ अल्लाह तआला के फ़ज़लों के नज़्ज़ारे हम देख रहे हैं। इशाअत-ए-क़ुरआन और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का काम विभिन्न भाषाओँ में बहुत बढ़ चुका है। एम.टी.ए के द्वारा से दुनिया के समस्त देशों में इस्लाम का वास्तविक संदेश पहुंच रहा है। पहले एक भाषा में था और एक चैनल था। इस वक़्त दुनिया में एम.टी.ए के आठ अलग अलग चैनल काम कर रहे हैं। दुनिया के अलग अलग देशों में एम.टी.ए स्टूडियोज़ बन गए हैं जहां से एम.टी.ए के प्रोग्राम जारी रहते हैं। अब एक जगह स्टूडियो नहीं हर जगह बन चुके हैं, हर जगह तो नहीं लेकिन कई जगह अफ़्रीक़ा में भी और नॉर्थ अमरीका में भी और यूरोप में भी बन चुके हैं। यदि हम अपने वसायल को देखें तो यह सम्भव ही नहीं है। सोशल मीडीया के द्वारा भी इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम पहुंच रहा है। पाकिस्तान की हुकूमत ने इस पर मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से पाबंदी लगाई है तो दुनिया के दूसरे देशों में पहले से बढ़कर अल्लाह तआला ने रास्ते खोल दिए हैं। फिर अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ क़ायम करने के लिए एक नया रस्ता भी समझा दिया है जो ऑनलाइन (online) मुलाक़ात या वर्चूअल (virtual) मुलाक़ात के द्वारा से इस कोविड की बीमारी की वजह से सामने आया। इस के द्वारा से मीटिंगें भी हो रही हैं। मुलाक़ातें भी हो रही हैं जिससे बराह-ए-रस्त जमाअतों से समपर्क हो रहा है। लोग ख़लीफ़-ए-वक़्त से सीधे राहनुमाई ले रहे हैं। मैं यहां लंदन से कभी अफ़्रीक़ा के किसी मुल्क से, कभी इंडोनेशिया से, कभी आस्ट्रेलिया से, कभी अमरीका से मुलाक़ात कर लेता हूँ तो ये सब ख़ुदा तआला की सहायता के नज़्ज़ारे हैं। अत: हमें कभी नहीं भूलना चाहिए कि अल्लाह तआला जो अपने फ़ज़लों के नज़ारे दिखा रहा हैऔर ख़िलाफ़त के इनाम से जो हमें नवाज़ा हुआ है इस का हमने हमेशा हक़ अदा करने वाला बनना हैता कि क़ियामत तक आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार हम इस नेअमत से फ़ायदा उठाते रहें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से तो अल्लाह तआला ने प्रगति का वादा फ़रमाया है और अल्लाह तआला अपने वादे के नहीं तोड़ता लेकिन हमें इस से फ़ैज़ पाने के लिए अपना किरदार अदा करना होगा। हमें अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार बंदा बनते हुए उस के आगे झुकना होगा। ख़िलाफ़त की नेअमत का इज़हार हमारे हर कथनी और करनी से होने की ज़रूरत है। ख़िलाफ़त से पूर्ण इताअत का अह्द आख़िरी सांस तक निभाने के लिए हमें हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए तभी हम क़ियामत तक अपनी नसलों को ख़िलाफ़त का आज्ञाकारी बनाने का हक़ अदा कर सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हम में से उन्हें अल्लाह तआला के फ़ज़लों का वारिस बनने का पूर्ण विश्वास दिलाया है जो ईमान पर क़ायम रहते हुए हर क़ुर्बानी के लिए तैयार रहेंगे। इस लिए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "यह मत ख़्याल करो कि ख़ुदा तुम्हें ज़ाए कर देगा। तुम ख़ुदा के हाथ का एक बीज हो जो ज़मीन में बोया गया। ख़ुदा फ़रमाता है कि यह बीज बढ़ेगा और फूलेगा और हर एक तरफ़ से इस की शाख़ें निकलेंगी और एक बड़ा दरख़्त हो जाएगा। अत: मुबारक वह जो ख़ुदा की बात पर ईमान रखे और मध्य में आने वाले विपत्तियों से न डरे क्योंकि विपत्तियों का आना भी आवश्यक है ताकि ख़ुदा तुम्हारी आज़माईश करे कि कौन अपने दावा बैअत में सच्चा और कौन झूठा है। वे जो किसी विपत्ति से घबरा कर पीछे हो जायगा वे कुछ भी ख़ुदा का नुक़्सान नहीं करेगा और बदबख़्ती उस को जहन्नुम तक पहुँचाएगी यदि वे पैदा न होता तो उस के लिए अच्छा था। परन्तु वे सब लोग जो अख़ीर तक सब्र करेंगे और उन पर कठिनाइयों के ज़लज़ले आएँगे और हवादिस की आंधियां चलेंगी और कौमें हंसी और ठट्ठा करेंगी और दुनिया उनसे सख़्त कराहत के साथ पेश आएगी वे आख़िर विजय होंगे और बरकतों के दरवाज़े उन पर खोले जाऐंगे। ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित कर के फ़रमाया कि मैं अपनी जमाअत को सूचना दूं कि जो लोग ईमान लाए ऐसा ईमान जो उस के साथ दुनिया की मिलावट नहीं और वे ईमान पाखंड या बुज़दिली से मिला जुला नहीं और वे ईमान इताअत के किसी दर्जा से वंचित नहीं ऐसे लोग ख़ुदा के पसंदीदा लोग हैं और ख़ुदा फ़रमाता है कि वही हैं जिनका क़दम सच्चाई का क़दम है।" (रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 309)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा का कलाम मुझे फ़रमाता है कि कई दुर्घटनाएं ज़ाहिर होंगी और कई आफ़तें ज़मीन पर उतरेंगी। कुछ तो उनमें से मेरी ज़िंदगी में प्रकटन में आ जाएँगी और कुछ मेरे बाद ज़हूर में आयेंगी और वह इस सिलसिला को पूरी तरक़्क़ी देगा कुछ मेरे हाथ से और कुछ बाद।''

(रिसाला अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 303-304)

अत: इंशा-ए-अल्लाह तआला ये प्रगतियां तो होनी हैं। अल्लाह तआला हमें हमेशा साबित-क़दम रखे। अल्लाह तआला करे कि सिलसिला की पूरी तरक़्क़ी के नज़्ज़ारे हम अपनी आँखों से देखने वाले हों। अल्लाह तआला हमें अपने वादों को पूरा करने वाला बनाए ताकि अल्लाह तआला के वादे के पूरा होने का नज़ारा हम अपनी ज़िंदगीयों में देख सकें। हमारी इबादतें, हमारी नमाज़ें, हमारे अमल अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाले हों। हम ख़िलाफ़त का सही समझ हासिल करने वाले हों और इस बारे में अपनी नसलों को बताने वाले हों ताकि क़ियामत तक हमारी नसलें इस नेअमत से लाभान्वित होती चली जाएं।

आज फिर मैं दुआओं का कहना चाहता हूँ। पाकिस्तान के अहमदियों को भी दुआओं में याद रखें। मज़लूम अहमदियों को जहां कहीं भी हैं दुआओं में याद रखें। मज़लूम मुस्लमानों को जहां भी हैं, फ़लस्तीन के या कहीं भी उनको दुआओं में याद रखें। अल्लाह तआला सबकी मुश्किलात को दूर फ़रमाए और आसानियां पैदा फ़रमाए। और जो अहमदी हैं इन सबको तौफ़ीक़ दे कि वे हक़ीक़ी रंग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा पर अमल करने वाले हों और हक़ीक़ी अहमदी बनें और वे मुस्लमान जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अभी तक पहचान नहीं रहे अल्लाह तआला उन्हें पहचानने और बैअत में आने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और समस्त दुनिया में हम जल्दी से जल्दी इस्लाम का झंडा और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का झंडा लहराते हुए देखें और समस्त दुनिया में हम तौहीद को क़ायम होता हुआ देखें।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

पर मुख़्तसर बात करूँगा और वे असीमित प्रयासों पर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने संसार में अमन क़ायम करने के लिए कीं, उन पर रोशनी डालूँगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सम्भव है कि यह सुनकर आप हैरान हों कि आजकल तो बहुत से तथाकथित मुस्लमान संसार का अमन तबाह कर रहे हैं और अपने चरमपंथी कर्यों को क़ुरआन-ए-करीम और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात से मंसूब कर रहे हैं। जहां वह अत्यधिक निर्दयता से फ़साद और दहशत फैला रहे हैं वहां यह भी दावा कर रहे हैं कि उनके आमाल इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं पर आधारित हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप यह सुनकर मज़ीद हैरान होंगे कि ये तथाकथित मुस्लमान जो उपद्रव और उग्रवाद फैला रहे हैं, उनको देखकर मेरा और निश्चित तौर पर प्रत्येक अहमदी का इस्लाम पर ईमान और भी बढ़ जाता है। शायद आप इस बात से परेशान भी हों और हैरान भी कि दूसरे मुस्लमानों की जानिब से उग्रवाद के कार्यों से एक अहमदी मुस्लमान का ईमान कैसे बढ़ सकता है। सम्भव है कि यह बात आपको सोचने पर भी मजबूर कर दे कि अहमदी मुस्लमान भी दूसरे मुस्लमानों की तरह हैं जो उग्रवाद को बढ़ावा देते हैं। परन्तु ये विचार और अनुमान पूर्णता ग़लत होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अतः, पहले तो मैं यह स्पष्ट कर दूँ कि अहमदी मुस्लमान संसार में अमन को बढ़ावा देने के लिए अपने प्रयासों में इंतिहाई मुख़लिस हैं और हमेशा प्रयास करते हैं कि वही काम करें जिसका वे प्रचार करते हैं। हमारे बाह्य और आन्तरिक में कोई अंतर्विरोध नहीं है। हम उन्ही शिक्षाओं के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं जिन्हें हम अपने दिलों में सच्ची इस्लामी शिक्षाओं समझते हैं। मैं यह भी स्पष्ट करना चाहता हूँ कि जब अहमदी मुस्लमान अमन, संरक्षण और "मुहब्बत सब के लिए" का प्रचार करते हैं तो यह कोई नई बात प्रस्तुत नहीं करते बल्कि इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं का ही प्रकटन करते हैं इस्लाम प्रत्येक पहलू से अमन, आपसी प्रेम, बर्दाश्त और मुहब्बत का धर्म है। निश्चित रूप से ये इस्लामी शिक्षाओं ही हैं जिनके कारण अहमदी समस्त लोगों के लिए चाहे वह मुस्लमान हों या ग़ैर मुस्लिम मुहब्बत की भावनाएं रखते हैं और यह केवल इस्लाम ही है जिसके कारण से हम संसार में हक़ीक़ी अमन चाहते हैं और इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक सम्भव प्रयास कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मैं नहीं चाहता कि आपको इस ज़ाहिरी इख़्तिलाफ़ और मख़मसे के कारण से ग़ैर ज़रूरी तौर पर परेशानी और चिंता में डालूं अर्थात एक ओर अहमदी मुस्लमान दूसरे मुस्लमानों को उग्रवादी कर्यों की निंदा करते हैं और दूसरी ओर यह कहते हैं कि ऐसे उग्रवादी कार्य उनके ईमान में बढ़ोतरी का कारण हैं। इस को स्पष्ट करने और समझाने के लिए मैं आपको 1400 वर्ष पूर्व इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दौर में ले जाना चाहता हूँ इस दौर में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भविष्य के बारे में एक महान भविष्यवाणी फ़रमाई थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था कि मुस्लमानों पर रुहानी प्रगति का एक दौर छा जाएगा और वह ईमान से बिल्कुल दूर हो जाऐंगे। उस दौर में मुस्लमानों के आमाल इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा से बिल्कुल बिरुद्ध होंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया था कि तथाकथित मुस्लमान उल्मा और रहनुमा इस्लामी शिक्षाओं की बिल्कुल ग़लत तफ़सीर करेंगे और उनकी बी बुद्धि केवल फ़साद और नाइंसाफ़ी बढ़ाने पर ही आधारित होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जबकि मुस्लमानों की इस बुरी हालत की भविष्यवाणी करते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ये ख़ुशख़बरी भी दी थी कि फ़ित्ना वफ़साद के ऐसे दौर में अल्लाह तआला इस्लाम को जीवित करने और उसकी सच्ची शिक्षाओं को फैलाने के लिए एक ब्यक्ति को भेजेगा। जिसे मसीह मौऊद और इमाम मह्दी के तौर पर भेजा जाएगा और वह इस्लाम की शांति प्रिय और असल शिक्षाओं को समस्त दुनिया में नाफ़िज़ करेगा। वह इन्सानियत को इस्लाम के हक़ीक़ी रुहानी नूर से अवगत करेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आज ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से हम देखते हैं कि इस महान भविष्यवाणी के दोनों हिस्से पूरे हो चुके हैं। अर्थात एक ओर तो इस्लाम और उस की शिक्षा ख़राब कर दी है और दूसरी ओर ख़ुदा तआला जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अलैहिस्सलाम के व्यक्तित्व में मसीह मौऊद और इमाम मह्दी को भी भेज चुका है। हज़रत-ए-अक़्दस अलैहिस्सलाम ने अपनी जीवन में इस्लाम के हक़ीक़ी चेहरे से पर्दा उठाया और उसकी महान शिक्षाएं संसार के सामने प्रस्तुत कीं। आप अलैहिस्सलाम ने यह साबित किया कि इन्सानियत की तारीख़ में अमन के सब से बड़े सरदार और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं। इस लिए यह इस महान भविष्यवाणी का पूरा होना ही है कि इन तथाकथित मुस्लमानों के दर्दनाक कर्यों को देख कर अहमदी मुस्लमानों के ईमान को तक़वियत मिलती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस परिचय के बाद मैं अब संक्षेप में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उन सच्ची शिक्षाओं को प्रस्तुत करना चाहूँगा जो संसार में सदा के लिए अमन क़ायम करने के लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अतुल्य प्रयासों का प्रमाण हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक बुनियादी और महत्वपूर्ण नुक्ता जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सिखाया, वह यह है कि संसार में प्रत्येक की ज़हनीयत और प्राथमिकताएँ एक दूसरे से विभिन्न होती हैं। यह सच्च है कि अधिकतर लोग अमन चाहते हैं परन्तु ई: भी सच्च है कि बहुत से लोग केवल अपने ज़ाती अमन और संरक्षण को प्राथमिकता देते हैं। उन्हें दूसरों की सफ़लता की फ़िक्र न होने के बराबर होती है या बिल्कुल ही नहीं होती। इन्सानी नफ़्सियात का अलम बताता है कि जहां प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि वह अमन शांति में रहे, वहां यह भी वास्तविकता है कि अधिकतर लोग यह पसंद नहीं करते कि उनके दुश्मन या मुख़ालिफ़ीन ख़ुशी और अमन से जीवन गुज़ारें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह भी सच्च है कि लोग अमन की विभिन्न मार्गों को महत्व देते हैं। उदाहरण के तौर पर कुछ केवल अपने दिलों और ज़हनों की अमन शांति को महत्व देते हैं, कुछ अपने घर की अमन शांति को एहमीयत देते हैं जबकि अन्य अपने पड़ोसियों में अमन की इच्छा रखते हैं। कुछ लोग अपने कस्बों और शहरों को जबकि अन्य अपने देश के अमन को प्राथमिकता देते हैं। परन्तु अपने विशेष रुचि के अतिरिक्त उन्हें कोई फ़िक्र नहीं होती कि दूसरे शहरों और मुल्कों में क्या हो रहा है उन्हें संसार के दूसरे हिस्सों में रहने वाले उन लोगों के लिए जो मुश्किलों और कठिनाइयों में मुबतला हैं कोई हमदर्दी और मुहब्बत महसूस नहीं होती।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया पहले दौर में तो इस विमुखता और अलगाव के कुछ कारण था क्यों कि समाज और कौमों में इस तरह आपसी मेल मिलाप नहीं था, जैसा कि अब हैं। उस दौर में मेल मिलाप के माध्यम बहुत ही सीमित थे और एक क्षेत्र और देश के हालात की ख़बर दूसरे क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए एक लम्बा समय चाहिए होता था। और अधिकतर ख़बर पहुँचते पहुँचते ही पुरानी हो जाती थी और हालात फिर से तबदील हो जाते थे। इस लिए उन वक़्तों में दूसरों की तकलीफ़ को फ़ौरी महसूस करना और दूर दराज़ इलाक़ों में लोगों की सहायता करने के प्रयास करना बहुत मुश्किल था। जबकि आज संसार पुर्णत: बदल गया है और ग्लोबल विलेज् बन चुका है। बहर हाल जबकि संसार आपस में मिल चुका है, दूरियां सिमट चुकी हैं ओर दूरी की रोकें खत्म हो चुकी हैं, अब भी इस वस्तविकता को मानने से इन्कार किया जा रहा है कि हम आपस में एक दूसरे से सम्बन्ध और वास्ता रखते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया उदाहरण के तौर पर बहुत से लोग विश्वास रखते हैं कि मध्य पूर्व या अफ़्रीक़ा के हालात से योरप और उत्तरी अमेरिका के हालात पर कोई अंतर नहीं पड़ता। इसी तरह आस्ट्रेलिया और सुदूर पूर्व में बसने वाले बहुत से लोग यह समझते हैं कि संसार के दूसरे हिस्सों में जो उपद्रव हो रहा हैं, जैसा कि यूकरेन और रशिया के मध्य झगड़ा है, इन झगड़ों का उनकी जीवन पर और उनके देशों पर कोई प्रभाव नहीं। साधारणत: यही समझा जाता है कि जो आज दुनिया में बढ़ती हुई बेचैनी और फ़साद नज़र आ रहा है केवल प्रभावित क्षेत्रों तक सीमित है और इस का प्रभाव बाहर नहीं फैलेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया ये बातें तो एक तरफ़ा परन्तु इसके अतिरिक्त एक बहुत महत्वपूर्ण मसला है जो रूयों और समझ में एक बड़ा बदलाव पैदा कर रहा है। मैं जिस मसला की बात कर रहा हूँ वे इमीग्रेशन है और इस से भी बड़ा मसला देश छोड़ने वालों के नए समाज में मिल जाने का है। बहुत से देशों में हम देखते हैं कि मुहाजिरीन की नौजवान नसल में बेचैनी और निराशा बढ़ रही है। उनमें से कुछ नौजवान इस हद तक निराश हो गए हैं कि

उन्होंने सांप्रदायिकता इख़तियार कर ली और चरमपंथी गिरोहों में शामिल हो गए हैं। इस से इस समय वास्तव में एक भय पैदा हो रहा है क्योंकि तरक़्क़ी याफताह देश इस बात को समझ कर रहे हैं कि उनके अपने नौजवानों में से कुछ ऐसे हैं कि जो बुरी तरह प्रभावित हुए हैं और यह बात कौम के लिए बहुत बड़ा ख़तरा है। इस के प्रतिक्रिया के तौर पर तरक़्क़ी याफताह देशों की हुकूमतें और क़ानून नाफ़िज़ करने के विभाग एशियाई लोगों पर इस आशा के कारण पाबंदीयाँ लगाने जा रहे हैं कि इस से उनके समाज और लोग का संरक्षण होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जबकि यह दृष्टिकोण ग़लत है और उन गंभीर समस्याओं का उचित हल नहीं है। ज़रूरत तो इस बात की है कि इस मसला का पूर्ण और उचित हल निकाला जाए। इसलिए मैं आपको बताता हूँ कि इस्लाम के पाक नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमारे सामने इन समस्याओं का हल प्रस्तुत फ़रमाया है। अपनी रोशन शिक्षाओं के माध्यम से आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमने अमन जके सुनेहरी चांबियाँ हमें सौंपी हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट फ़रमाया है कि केवल दुनियावी माध्यम और भौतिक इच्छाओं पर ध्यान केन्द्रित करके संसार का अमन प्राप्त नहीं किया जा सकता। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शिक्षा दी है कि समस्त लोगों के लिए चाहे मुस्लमान हों या ग़ैर मुस्लिम, फ़साद से बचने के लिए और ना उम्मीदी और नफ़रत के सुलगते शोलों से सुरक्षित रहने का केवल एक ही माध्यम है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शिक्षा दी है कि हक़ीक़ी अमन के क़ियाम के लिए लोगों को अपने स्रष्टा की पहचान और उस के दरवाज़े पर सिर झुकाना होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पहले ही सावधान कर दिया था कि एक दौर आएगा जब मुस्लमान भी अपने धर्म की वास्तविक शिक्षाओं को भुला देंगे और ख़ुदा तआला की कुछ परवा नहीं करेंगे और उनका ईमान केवल ज़बानी वज़ीफ़ों तक सीमित हो जाएगा। इसी तरह अन्य धर्मों के लोग भी ख़ुदा तआला की हक़ीक़ी पहचान नहीं कर सकेंगे और वह जो किसी धर्म पर विश्वास नहीं रखते वह ख़ुदा तआला के व्यक्तित्व से ही इंकारी होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया वह ख़ुदा जिसके बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बताया है वह समस्त कायनात का स्रष्टा है। वह ख़ुदा है जिसकी बहुत सी सिफ़ात में से एक "सलाम" अर्थात अमन क़ायम करने वाला भी है। इस लिए क़ुरआन-ए-करीम में सूरा हश्र आयत 24 में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इरशाद फ़रमाया है कि संसार को बता दो कि वह इस बादशाह, पाक ज़ात और अमन देने वाले पर ईमान लाएं। "सलाम" का यह अर्थ है कि वह ज़ात जो संसार को अमन प्रदान करती है वह रोशनी है जिससे अमन की समस्त किरनें फूटती हैं। इस लिए पूर्ण शांति का स्रोत होने के नाते ख़ुदा चाहता है कि समस्त लोगों में आपसी प्रेम और अमन क़ायम रहे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जैसा कि माता पिता अपने बच्चों के लिए पसंद नहीं करते कि वह आपस में लड़ाई झगड़ा करें और घर में ख़राबी का कारण बने, इसी तरह अल्लाह तआला नहीं चाहता कि उस की मख़लूक़ फ़ित्ना वफ़साद में पड़े। माता पिता हमेशा अपने इन बच्चों को पसंद करते हैं जो ज़्यादा अच्छी तबीयत के और सुलह पसंद होते हैं। इसी तरह देश के क़ानून भी उन्ही को पसंद करता है जो अमन पसंद हैं। बेशक हमारा ईमान है कि अल्लाह तआला उनसे मुहब्बत करता है जो अपने भावनाओ को क़ाबू में रख सकते हैं और शांतिप्रिय हैं। यदि हम इस नुक्ता पर ग़ौर करें तो ये बात रोज़ रोशन की तरह स्पष्ट हो जाती है कि वह तथाकथित मुस्लमान जो चरमपंथी नज़रियात की पैरवी कर रहे हैं वह अपने इस दावा में बिल्कुल ग़लत हैं कि अल्लाह तआला मुस्लमानों को तलवार के जिहाद और हत्या और बर्बरता का आदेश देता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में जो युद्ध हुए उन्हें अपने वास्तविक पृष्ठभूमि में देखना चाहिए। इस बात में कोई संदेह नहीं कि इस्लाम के आरम्भिक कुछ वर्षों में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम बेरहम विरोध और दर्दनाक मज़ालिम का शिकार रहे। कई वर्ष के सब्र के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला की ओर से ग़ैर मुस्लिम आक्रमण करने वालों के विरुद्ध रक्षात्मक युद्ध करने की आज्ञा दी गई। यह आज्ञा क़ुरआन-ए-करीम की सूर: हज की आयत 40 में दी गई है, जहां अल्लाह तआला फ़रमाता है कि चूँकि मुस्लमानों पर जंग डाली गई है और उनके लिए उत्तर देने और अपना बचाव करने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं छोड़ा गया इस लिए उन्हें जंग करने की आज्ञा दी जा रही है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि यह उत्तर देना क्यों ज़रूरी था, अल्लाह तआला ने अगली ही आयत में इस का उत्तर दिया है, सूर: हज की आयत नंबर 41 में अल्लाह तआला फ़रमाता कि मुस्लमानों को अत्याचारी आक्रमण कर्ताओं ने उनके घरों से व्यर्थ में निकाला और यदि अल्लाह तआला उन्हें इस बात की आज्ञा न देता कि हद से बढ़ने वालों को ताक़त के साथ अत्याचार करने से रोका जाए तो कोई भी अमन से नहीं रह सकता। यदि मुस्लमान अपना बचाव न करते तो इसके बाद न ही धार्मिक लोग और न ही दूसरे अमन और सकून से रह सकते।

इसी आयत-ए-करीमा में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि मुस्लमान अपना बचाव नहीं करते तो कोई गिरजा, यहूदी इबादत खाने, राहिब के इबादत खाने और मस्जिद सुरक्षित नहीं रहती, हालाँकि वहां लोग केवल और केवल ख़ुदा का वर्णन करने, अमन फैलाने और अपने दिलों और ज़हनों से प्रत्येक किस्म की बुराई मिटाने के लिए इकट्ठे होते हैं, इसलिए सीमा पार करने वाले का हाथ रोकने की जो आज्ञा अल्लाह तआला ने दी है वह इस कारण से है कि यदि यह नहीं दी जाती तो समस्त इबादत खाने मिट जाते और संसार का अमन ही पूर्णता पर नष्ट हो जाता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अत: अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को रक्षात्मक युद्ध की आज्ञा केवल अत्याचार और नाइंसाफ़ी को ख़त्म करने के लिए दी। यह आज्ञा उन लोगों को रोकने के लिए दी गई जो समस्त लोगों की आज़ादी और अधिकारों को नष्ट करना चाहते थे। यह आज्ञा उन लोगों को रोकने के लिए दी गई जो धार्मिक आज़ादी की बुनियाद को ही तबाह करने पर तुले थे और यह आज्ञा केवल इस्लाम की रक्षा करने के लिए नहीं दी गई बल्कि समस्त धर्मों और समस्त आस्थाओं का संरक्षण करने के लिए दी गई। इस आयत-ए-करीमा से हमें यह भी सीखने को मिलता है कि मस्जिदें और अन्य धर्मों के इबादतगाहें अमन की आम जगाहें हैं और यह प्यार और मुहब्बत फैलाने के लिए बनाई जाती हैं न कि किसी भी किस्म की चरमपंथी और नफ़रत फैलाने लिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फिर सूर: इन्फ़ाल आयत 62 में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर इंतिहाई सुन्दर शिक्षा नाज़िल फ़रमाई है जो कि मुस्लमानों को अमन और संरक्षण क़ायम करने के हवाला से मार्गदर्शन प्रदान करती है यहां तक कि जंग के हालत में भी। इस आयत-ए-करीमा में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम्हारा दुश्मन अमन और समझोते के लिए हाथ फैलाए तो उसे बिना देरी किय स्वीकार कर लेना चाहिए और इसके बाद अल्लाह तआला पर भरोसा करना चाहिए। इस लिए बजाय इसके कि समझोते की पेशकश में गंभीर नहीं होने का गुमान किया जाए और यह विचार किया जाए कि दुश्मन धोखा कर रहा है, मुस्लमानों को अल्लाह पर भरोसा करने को कहा गया है। अल्लाह तआला ने शिक्षा दी है कि मुस्लमानों को जहां भी सम्भव हो एक दूसरे से दूरियाँ ख़त्म करनी चाहिऐं, यहाँ तक कि उन लोगों से भी जो नास्तिक हैं, ख़ुदा तआला पर ईमान नहीं रखते और अपने दिलों में इस्लाम के विरुद्ध दुश्मनी रखते हैं। वास्तव में अल्लाह तआला ने इस बात पर बड़ा ज़ोर दिया है कि मुस्लमान संसार में आपसी प्रेम क़ायम करने की ख़ातिर अमन के प्रत्येक अवसर को मज़बूती से लें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला के एक और इरशाद के बारे में अवगत किया है जो क़ुरआन-ए-करीम की सूर: हा म सज्दा की आयत नंबर 35 में दर्ज है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अमन क़ायम करने की ख़ातिर बुराई का उत्तर अच्छाई और नेकी के माध्यम दिया जाए। इस फ़रमान के पीछे जो हिक्मत है वह यह है कि यदि कोई नफ़रत का उत्तर मोहब्बत से दे तो कुछ आशा होती है कि दुश्मनी और पृथक्करण की गहराई से दोस्ती और उभराए।

यह क्या ही सुन्दर शिक्षा है। निश्चित तौर पर इसी असंख्य उदाहरण हैं जो ये

साबित करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अमन, समझोते, संरक्षण और मुहब्बत की शिक्षा लाए हैं और मैंने उनमें से केवल कुछ एक प्रस्तुत की हैं। ये साबित करती हैं कि इस्लाम का ख़ुदा, अर्थात अल्लाह तआला वह हस्ती है जो अपनी मख़लूक़ के लिए अमन प्यार और मुहब्बत चाहता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इसलिए वह जो ये समझते हैं कि इस्लाम की शिक्षाएं चरमपंथी या नफ़रत फैलाती हैं,उन्हें अपने ज़हनों और दलों से ऐसे संदेह और ग़लत-फ़हमियाँ हमेशा के लिए दूर कर लेनी चाहिऐं। आजकल जो बेवकूफ़ाना हत्या और बर्बरता और फ़साद देखते हैं इसका आरोप इस्लाम या इस्लामी शिक्षा पर नहीं पड़ता बल्कि यह उन तथाकथित मुस्लमानों के आमाल का परिणाम है जो नफ़रत और स्वार्थ से भरे हुए हैं और जिन्होंने अपने व्यक्तिगत् लाभ के लिए इस्लाम की हक़ीक़ी रूह को गन्दा कर दिया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आज ख़ुदा तआला के वादों के अनुसार केवल अहमदिया जमाअत ही है जो कि संसार को इस्लाम की सच्ची शिक्षा से रोशनाज़ कर रही है। यही कारण है कि प्रत्येक वर्ष लाखों मुस्लमान और ग़ैर मुस्लिम लोग अहमदिया मुस्लिम जमाअत में शमूलीयत इख़तियार कर रहे हैं। वह केवल ख़ुदा तआला की मुहब्बत प्राप्त करने के लिए और हक़ीक़ी अमन और इतमीनान प्राप्त करने के लिए अहमदी मुस्लमान बन रहे हैं। ये अहमदी उन निराश लोगों की तरह नहीं हैं जो अपनी भावनाओ और प्रतिक्रिया को क़ाबू में नहीं रख सकते और जिस कारण से वह चरमपंथी गिरोहों का हिस्सा बन रहे हैं और ज़ालिमाना तरीक़ पर संसार में इस्लाम का प्यार अनाम ख़राब कर रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आज जब इस्लाम को बिल्कुल ग़लत ढंग से प्रस्तुत किया जा रहा है, हम अहमदी न हिम्मत हारते हैं और न ही निराश होते हैं, हम पक्का विश्वास रखते हैं कि हम सफ़ल होंगे और एक दिन दुनिया पर इस्लाम की सच्चाई का सूरज ज़रूर निकले गा और प्रत्येक मुल्क और कौम के लोग इस की सुन्दर शिक्षाओं को समझेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन शब्दों के साथ में एक मर्तबा फिर आप सब का शुक्रिया अदा करते हुए अपन निवेदन ख़त्म करता हूँ। आप का बहुत शुक्रिया कि आप समय निकाल कर यहां मेरी बातें सुनने के लिए आए हैं। अल्लाह तआला आप पर फ़ज़ल करे। आप सब का शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण 4 बजकर 45 मिनट तक जारी रहा। भाषण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई और इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान तशरीफ़ ले गए।

मेहमानों के विचारों

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस भाषण ने मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा और बहुत से मेहमानों ने खुल्म खुल्ला इस बात का प्रकटन किया कि ख़लीफतुल मसीह के भाषण ने हमारे दिल बदल दिए। इन मेहमानों में से कुछ एक मेहमानों के विचारों निमंलिखित हैं।

मराक़श के एक मित्र मुस्तफ़ा जिनाह साहिब बेल्जियम से इस जलसा में शामिल होने के लिए आए थे। वह अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहने लगे: यहां आकर में अपनी भावनाओ को प्रस्तुत नहीं कर सकता। ऐसा रुहानी नज़ारा देखा है जिसने मेरी रूह को गहराई तक प्रभावित किया है। इस्लाम की सही तस्वीर मुझे यहां नज़र आई है। मैं लगभग दो वर्ष से जमाअत को जानता हूँ परन्तु तीन माह से निरंतर जमाअत के प्रोग्रामों में शामिल हो कर देख रहा हूँ। परन्तु समय के ख़लीफा को देखकर और आपका भाषण सुनकर मेरा दृष्टिकोण अहमदियत के बारे में तबदील हो गया है। अल्लाह तआला मुझे ऐसी बैअत की तौफ़ीक़ दे कि मैं दीन का ख़ादिम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के संदेश को संसार में फैलाने वाला बनू आमीन।

बेल्जियम से मराक़श के एक मित्र मुहम्मद लियावी साहिब जलसे पर आए थे। उन्होंने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा में एक वर्ष से अहमदिया मस्जिद बरसल्ज़ के क़रीब रहता हूँ। तलगभग तीन माह से अहमदियत का अध्ययन कर रहा हूँ। मैं यही समझता था कि अहमदिया जमाअत बहुत सी दूसरी जमाअतों की तरह ''बिद्दत'' है। जैसे जैसे पुस्तकें पढ़ीं मेरी सोच बदलती गई परन्तु मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं अहमदी हो जाऊँगा। अब मुझे हृदय की शांति हो गया है कि यह हुस्न-ए-अख़लाक़, यह मुहब्बत जो जमाअत में रंग और नस्ल के अंतर के बिना उपस्थित है यह इन्सानी प्रयासों से सम्भव नहीं है अतिरिक्त इस के कि इस जमाअत पर ख़ुदा का हाथ है। जब मैंने ख़लीफ़तुल मसीह को देखा तो उसी समय मैंने बैअत का फ़ैसला कर लिया था। अब अल्लाह तआला मेरी पत्नी और बच्चों को भी हिदायत दे।

मराक़श के एक मित्र अब्दुल्लाह कलनानी (Kailnani)भी बेल्जियम से आए थे। उन्होंने कहा कि : मैं मराक़शी अहमदी हूँ। जलसा सालाना बेल्जियम और जलसा सालाना हॉलैंड में शामिल हो चुका हूँ, परन्तु किसी ऐसे जलसा में पहली मर्तबा शामिल हुआ हूँ जिस में ख़लीफतुल मसीह शामिल हूँ। मुझे इस जलसे का सारा प्रबन्ध बिल्कुल ऐसा लगा है जैसे शहद की मक्खीयों की मलिका और उस के नीचे सारे इंतिज़ामात हैं। यह मेरी ख़ुशक़िसमती है कि मैंने ऐसा भाई चारा, मुहब्बत और ऐसे इंतिज़ामात देखे हैं कि पहले कभी सोचा भी न था।

जलसे की तक़ारीर से भी बहुत लाभ पहुंचा है और ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई है। जलसे के अन्य शामिल होने वालों से बातें करके मेरा ईमान बहुत मज़बूत हुआ है। ख़लीफतुल मसीह की तक़ारीर सुनी तो ऐसा लगा जैसे मैं रुहानी तौर पर उड़ रहा हूँ। जैसे मैं दुबारा पैदा हुआ हूँ। जैसे मुझे संसार से कोई वास्ता नहीं। इस कैफ़ीयत को वर्णन करना मेरे लिए मुश्किल है।

Adamou Seidou साहिब बेल्जियम और जर्मनी के बाडर पर रहते हैं। वहां से जलसे में शमूलीयत के लिए आए थे। वह वर्णन करते हैं : मुझे जमाअत अहमदिया का परिचय एक मित्र के माध्यम से हुआ। परन्तु जलसा जर्मनी पर आने से पहले तक मैं धर्म और जमाअत को संजीदगी से नहीं लेता था। परन्तु जलसे में शामिल हो कर मेरी भावनाओं की काया पलट गई। जिस जमाअत को मैं गंभीरता से नहीं लेता था उसी जमाअत ने मेरे जीवन के बेहतरीन दिन मुझे जलसा सालाना की शक्ल में दिखाए।

उन्होंने अपना एक स्वप्न वर्णन करते हुए बताया कि : यहां जलसे पर आकर मैंने स्वप्न में देखा कि मैं समुंद्र पर हूँ और मैं बहुत घबराया हुआ हूँ। परन्तु अल्लाह तआला की ओर से मेरे दिल में सुकून नाज़िल होता है और वह सुकून अब मैं बेदारी में भी महसूस कर सकता हूँ यह सुकून मुझे जलसा सालाना जर्मनी में आने के कारण से ही मिला है। इस जलसे ने मुझे बिल्कुल बदल है।

एक आरमीनियन नौजवान जो कट्टर ईसाई हैं उन्होंने बहुत ख़ुशी का प्रकटन करते हुए कहा : आज मैं इस बात पर बेहद ख़ुश हूँ कि एक मुबारक इन्सान से मेरी मुलाक़ात हुई है।

एक नौजवान Cem Utebey जिसका ताल्लुक़ Alevism से है उसने कहा : मुझे सारे इंतिज़ामात बहुत पसंद आए। मुझे मालूम नहीं था कि इस्लाम इतना अम्न पसंद धर्म है। ख़लीफ़ा से एक प्रकार का विशेष प्यार और अमन महसूस हो रहा था।

एक अरब युवा ने कहा : ख़लीफ़ा की बात बहुत क़ायल करने वाली और उनका प्रस्तुत करने का ढंग अत्यधिक प्रभावित करने वाला लगा। उनके व्यक्तित्व से ही अमन प्रकट हो रहा था। मुझे ऐसी शिक्षा का अतिरिक्त मुस्लमान होने के ज्ञान न था।

डाक्टर Valdis Steins साहिब का ताल्लुक़ Latvia देश से है। वह उच्च स्तर के politician भी रह चुके हैं और यूनीवर्सिटी में प्रोफ़ैसर भी रहे हैं। अब वह research करते हैं और theology के मज़मून के बारे में पुस्तकें लिखते हैं। उन्होंने कहा : मैंने जो आज ख़लीफतुल मसीह का भाषण सुना तो मुझे तो यह महसूस हुआ कि मैं एक विद्यार्थी हूँ मैं भी बिल्कुल यही नज़रिया रखता हूँ और इस नज़रिया को अमन के लिए ज़रूरी समझता हूँ। मैंने तौरेत को भी पढ़ा। मूसा ने जो शिक्षा दी वह भी मैंने पढ़ी है। मैं तो ऐसी बातों की तलाश में था।

उन्होंने कहा कि मुझे बहुत से लोग देखने को मिले हैं परन्तु आज जब ख़लीफतुल मसीह को देखा है तो विशेष व्यक्ति मालूम हुए हैं। ऐसे लोग संसार में ज़्यादा नहीं मिलते। उनसे एक हिक्मत, सच्चाई और ज़हानत प्रकट होती है। मैं इन्सानों को तुरंत पहचान लेता हूँ और ख़लीफ़ा एक विशेष इन्सान हैं। उनकी एक सोच है और जो कहते हैं सच्च कहते हैं।

तुर्की से सम्बन्ध रखने वाले एक साहिब Attila Caliscan ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा : मुझे ख़लीफ़ा को पहली बार देखने का अवसर मिला। बहुत प्यार करने वाले मालूम होते हैं। बिना सोचे समझे इन्सान उन पर विश्वास कर सकता है। जो बातें ख़लीफ़ा ने कहीं वह क़ुरआन-ए-करीम की और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बातें थीं। निश्चित हम लोग इन शिक्षाओं को भूल गए हैं।

उन्हों ने कहा : ख़लीफतुल मसीह कोई आम इन्सान नहीं लगते बल्कि उनमें कोई विशेष बात है जिसको वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्दों नहीं हैं। जबकि कि समय बहुत कम था परन्तु हुज़ूर अनवर ने अपने भाषण में इस्लाम की बुनियाद वर्णन कर दी। जो भी वर्णन किया बहुत उच्चतम था। हुज़ूर ने आपसी इत्तिफ़ाक़ पैदा करने की शिक्षा दी और बताया कि सबको इकट्ठे मिल-जुल कर रहना होगा ताकि अमन पैदा किया जा सके। अहमदिया मुस्लिम जमाअत यह प्रयास करती है कि इस्लाम की असल शिक्षा इन्सानों तक पहुंचे। ये बहुत आला काम है।

एक जर्मन दोस्त Heiko Fahnicke साहिब ने कहा : यह मेरा पहला अवसर था कि ख़लीफ़ा को देखूं और अहमदियत के बारे में कुछ जान सकूं। ख़लीफ़ा बहुत ही अमन और प्यार वाले मालूम होते हैं। जो भी उन्होंने कहा सच्च कहा और यदि समस्त इन्सान इस पर अनुकरण करना शुरू कर दें तो पूरे संसार में अमन फैल जाए। मैंने अपनी आशाओं से बढ़कर इस्लाम के बारे में यहां से सीखा है और मुझे बहुत मज़ा आया।

एक पुलिस ऑफीसर ने कहा : जो अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लाम की शिक्षा प्रस्तुत कर रही है यह तो वही शिक्षा है जिसकी तलाश में हम police वाले हैं।

दो तीन स्टूडैंटस जो इस जलसा में शामिल थे उन्होंने कहा : इस्लाम की जो तस्वीर media प्रस्तुत करता है वह पर्याप्त गहरा प्रभाव रखती है। परन्तु आज यहां आकर और पहले तो तिलावत सुन कर जहां ''لَآ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ'' का वर्णन था और फिर विशेषता ख़लीफ़ा का भाषण सुन कर असल शिक्षा का पता चला। हमें आज पता चला कि इस्लाम की जो असल शिक्षा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रस्तुत की वह अभी तक क़ायम है। आज पता यह भी लगा कि इस्लाम में भी दो किस्म के संप्रदायवादी हैं, एक वह हैं जो ज़्यादा दुनियावी आमाल में डूबे हैं और दूसरे वह हैं जो ज़्यादा संप्रदायवादी हैं। परन्तु आज इस्लाम का हक़ीक़ी चेहरा भी नज़र आया जो दोनों के मध्य है और वह जमाअत है।

एक महिला जो कि Italy से आई थीं उन्होंने कहा : मैंने मस्जिद नब्वी के बारे में स्वपन में देखा। तो इस लिए इस्लाम के बारे में सोचा और इधर जलसे में शामिल हो गई। उधर जब तिलावत सुनी तो बिल्कुल विश्वास हो गया कि असल इस्लाम यही है। अब मैं इस्लाम के सम्बन्ध में मज़ीद पढ़ूंगी।

क्रोशिया से सम्बन्ध रखने वाली दो लेखक महिलाओं ने भी यह भाषण सुना और उन्होंने कहा : आज हमने आपका भाषण सुना। आपके भाषण ने हमें बहुत प्रभावित किया। यहां के माहौल ने हमारे इस्लाम के बारे में कल्पना को बदला है और हम यहां अच्छा महसूस हैं।

बोसनिया से सम्बन्ध रखने वाले एक साहिब ने वर्णन किया : हुज़ूर अनवर का भाषण बहुत पसंद आया। हुज़ूर अनवर ने एक ज़िंदा ख़ुदा के बारे में कल्पना को प्रस्तुत किया। इस समय केवल जमाअत अहमदिया एक ऐसी जमाअत है जो या दावा करती है और दिखाती भी है कि ख़ुदा तआला आज भी ज़िंदा है और यह बात हुज़ूर यअनवर ने बहुत आसान शब्दों में परन्तु बहुत उत्कृष्ट रंग में वर्णन फ़र्मा दी। और आज इन्सानियत को इसी की आवश्यकता है। मुझे महसूस होता है कि आप दूसरों से विभिन्न हैं और हक़ीक़ी इस्लाम केवल आप ही का है।

हंगरी से सम्बन्ध रखने वाले एक मित्र ने कहा : ख़लीफतुल मसीह के शब्दों का चुनाव बहुत विशेष और उच्चतम है। आप बहुत सोच समझ कर बात करते हैं। मेरे बहुत से मुस्लमान मित्र हैं परन्तु जमाअत अहमदिया से जब सम्बन्ध पैदा हुआ तो पता चला कि असल शांतिप्रिय और इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा अहमदियों में है। और अहमदी अमन की जो शिक्षा दुनिया के सामने प्रस्तुत करते हैं इस पर स्वयं कार्यरत हैं।

एक मुस्लमान मित्र ने कहा : हुज़ूर अनवर की सब बातें बहुत अच्छी लगीं। आपका भाषण ज़बरदस्त था और इस्लाम की आपसी शिक्षा आपने बेहतरीन रंग में प्रस्तुत की। में आपका शुक्रगुज़ार हूँ कि आपने मुझे अपना धर्म दुबारा से याद करवाया और इस की शिक्षा की असल रूह मुझ में दुबारा से उजागर की है।

एक मित्र ने कहा : हुज़ूर अनवर का चेहरा मुबारक बहुत सुन्दर लगा और आपका भाषण बहुत एहमीयत रखता है। उसने इस बात का प्रकटन किया कि हुज़ूर अनवर A man of peace हैं। इस्लाम और अमन एक ही चीज़ हैं उनमें कोई अंतर नहीं। आज संसार का अमन जमाअत अहमदिया के पास है।

एक ग़ैर अहमदी महिला ने कहा : हुज़ूर अनवर बहुत रहम-दिल और नरम भाषा वाले हैं। आपका भाषण बहुत प्रभावित था। ख़ासतौर पर इस लिए कि वर्तमान का इस में वर्णन था।

एक मित्र ने कहा :हुज़ूर अनवर का चेहरा मुबारक बहुत ख़ूबसूरत लगा और आपका भाषण बहुत महत्व रखता है। उसने इस बात का प्रकटन किया कि हुज़ूर अनवर a man of peace हैं। इस्लाम और अमन एक ही चीज़ हैं उनमें कोई अंतर नहीं। आज संसार का अमन जमाअत अहमदिया के पास है

एक ग़ैर अहमदी महिला ने कहा: हुज़ूर अनवर बहुत रहम-दिल और नरम ज़ुबान वाले हैं। आपका भाषण बहुत प्रभावी था। ख़ासतौर पर इस लिए कि वर्तमान समय का इस में हल था।

एक दोस्त Sefer Bzigal साहिब जो बोस्निया से सम्बन्ध रखते हैं अपनी बेटी के साथ आए हुए थे। उन्होंने कहा हुज़ूर अनवर ख़ुदा के बंदे हैं और आपने मेरे ईमान को दृढ़ता प्रदान की है। आज संसार को मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आवश्यकता है। हुज़ूर अनवर ने जो भी संदेश दिए हैं वह संसार के प्रत्येक बाशिंदा के लिए हैं और उग्रवाद के बिल्कुल विपरीत हैं। आज हुज़ूर की बातों पर अनुकरण किया जाए तो दुनिया में अमन स्थापित हो जाएगा।

एक ईसाई टीचर ने जिस का नाम Edith Feike है उन्होंने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा: मैं हुज़ूर अनवर के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हूँ और आप के लिए मेरे दिल में सम्मान है। आपका व्यक्तित्व एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी सुरक्षा करना ज़रूरी है। दुनिया की अन्य प्रसिद्ध शख़्सियतों की तरह आपको शौहरत की कोई फ़िक्र मालूम नहीं होती। पोप को जब देखा जाए तो वह शौहरत से आन्नद पाता है परन्तु समय के ख़लीफा में यह बात नज़र नहीं आती। महिलाओं से हुज़ूर अनवर ने भाषण फ़रमाया इस से मालूम हुआ कि हुज़ूर औरतों का विचार रखते हैं और उनकी तरक़्क़ी की फ़िक्र है और उनको वह शिक्षाएं सिखाते हैं जिनकी हिफ़ाज़त करना औरत के लिए ज़रूरी है।

उन्होंने कहा: आप का तब्लीग़ी भाषण भी बहुत ख़ूब था और मुझे आज पता चला है कि असल इस्लाम वह इस्लाम नहीं है जो मीडिया में प्रकट किया जाता है। अंत में जो दुआ थी बहुत अच्छी लगी और मैंने भी अपने तौर पर दुआ की।

एक और मित्र ने कहा:हुज़ूर अनवर एक अम्न पसंद व्यक्ति हैं। आपका खुला दिल और आपके ज्ञान की व्यापकता मुझे पसन्द आई। आपके भाषण में एक दूसरे से रवादारी के व्यवहार का जो पक्ष था वह अच्छा लगा और यह बात भी अच्छी लगी कि आप केवल शिक्षा नहीं देते बल्कि अनुकरण भी करते हैं।

एक मेहमान Andreas Winterhalder साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर का व्यक्तित्व बाबरकत व्यक्तित्व है यूं मालूम होता है कि दूसरों की तरह आपको बात करते हुए अपनी ज़ात की फ़िक्र नहीं बल्कि जो बात वर्णन फ़र्मा रहे हैं वही मुराद है। आप का व्यक्तित्व नरमी और सुकून और अमन से भरा हुआ है। आप का संदेश अच्छा लगा कि समाज में अम्न पसंदी की आवश्यकता है और समस्त मुस्लमानों को कुछ मुस्लमानों के बुरे कर्मों के कारण से बुरा नहीं कहना चाहिए।

(फ्रांस के एक नई बैअत करने वाले Anly Anfane(आनली साहिब) जलसा सालाना जर्मनी पर आए थे। यह जज़ाइर कमोरोज़ के रहने वाले हैं। तीन हफ़्ता पूर्व ही उन्होंने बैअत की है। यह बताते हैं कि

बैअत करने से पहले मैं मुस्लमान तो था परन्तु मज़बूती नहीं मिलती थी। कल जब हुज़ूर अनवर के पीछे जुम्अः पढ़ा तो मुझे बहुत मज़ा आया और जीवन में पहली बार नमाज़ में रोना आया। जमाअत में दाख़िल होने से पूर्व मेरे सारे काम फंसे हुए थे परन्तु जब से अहमदी हुआ हूँ मेरे सारे काम आसान हो गए हैं और प्रतिदिन ख़ुदा तआलाके निशान नज़र आते हैं ।

मैं अहमदी होने के बाद आराम और हार्दिक शान्ति महसूस कर रहा हूँ। जलसा का माहौल बहुत पसन्द आया है। काम के सिलसिला में मुश्किलें थीं परन्तु जब से बैअत की है इस के कुछ दिन बाद आसानियां नज़र आना शुरू हुईं। आने से पहले एक जॉब की आफर हुई ।

अब जलसा पर आकर मुझे बहुत ताज्जुब हो रहा है कि इतने लोग एक ही जगह पर इतने मुनज़्ज़म तरीक़ पर इकट्ठे बैठे हैं और किसी किस्म का कोई झगड़ा नहीं है। कोई शोर नहीं है

(शेष.......................)

☆ ☆ ☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** *Qadian*
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 1 July 2021 Issue No.26

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

मुस्लमान जान कर मैंने उसकी ज़मानत दे दी। जब उसने मुझ पर विश्वास किया तो मैं उस पर क्यों विश्वास नहीं करता। आख़िर वक़्त ख़त्म होने को हुआ तो लोगों को हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की जान का ख़तर पैदा हुआ। लेकिन ठीक वक़्त पर एक व्यक्तिदूर से बे-तहाशा घोड़ा दौड़ाता हुआ आया और बे-जान हो कर आ गिरा और हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु से माज़रत की कि काम की ज़्यादती की वजह से वह बमुश्किल ठीक समय पर पहुंच सका है और उनकी परेशानी का कारण है एक तरफ़ अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ुरबानी की और दूसरी तरफ़ उस व्यक्ति के वादा पूरा करने की मिसाल दूसरी क़ौमों में कहाँ मिलती है। इस वाक़िया को अंग्रेज़ों ने अपनी कहानियों और नज़मों में भी वर्णन किया है। ऐसी ही एक और मिसाल है। शाम के फ़तह हो जाने के बाद एक दफ़ा ईसाई लश्कर अस्थाई तौर पर ग़ालिब हो गया और इस्लामी लश्कर को कुछ इलाक़ा छोड़ना पड़ा। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म के अधीन मुस्लमानों ने इस इलाक़ा के सब वसूल शुदा टैक्स वापिस कर दिए कि जब हम तुम्हारी हिफ़ाज़त नहीं कर सकते तो हम तुम्हारा टैक्स अपने पास नहीं रख सकते। यह इलाक़ा भी ईसाइयों से आबाद था। लेकिन बावजूद इस के कि उनके ही धर्म वाले फ़तह प्राप्त कर के आ रहे थे वे मुस्लमानों की इस नेक नफ़्सी से इस क़दर मुतास्सिर हुए कि महिलाएं और पुरुष रोते हुए शहर के बाहर तक उन्हें छोड़ने आए और कहते जाते थे कि यदि ईसाई लश्कर आपकी जगह होता तो टैक्स की वापसी की जगह जाते हुए जो कुछ हमारा था वह भी लूट कर ले जाता और दुआएं करते जाते थे कि अल्लाह तआला आपको फिर वापिस लाए।

अफ़सोस कहाँ वह ज़माना था और कहाँ अब मुस्लमान सबसे ज़्यादा विश्वासघात समझा जाता है। उल्मा ने ग़ैर मज़ाहिब को लूट लेने का फ़तवा दिया हुआ है। ग़ैर मज़हब की हुकूमत से ग़द्दारी को धर्म का भाग क़रार दिया हुआ है। ग़ैर मुस्लिमों के क़तल को सवाब का कारण बतलाते हैं। उद्देश्य हर वे नेकी जिस पर मुस्लमान को गर्व था आज उनमें से नष्ट है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन काश जमाअत अहमदिया अपनी ज़िम्मेदारी को समझे और इस्लाम के खोए हुए सम्मान को फिर वापिस लाए। और फिर वही आचरण मुहम्मद रसूल अल्लाह सलाम के ग़ुलामों में दुनिया देखे जिन्हें देख कर इन्सान को ख़ुदा तआला नज़र आ जाता है। वे सच्चे हों और ऐसे सच्चे कि स्वयं भूखे मर जाएं, बीवी बच्चे भूखे मर जाएं, लेकिन दूसरे की अमानत में ख़ियानत न हो। वे सच्चे हों और ऐसे सच्चे कि जान जाए माल-ओ-दौलत जाए, ओहदा जाए लेकिन झूठ का एक शब्द ज़बान पर न आए और न आए। वादा करें तो जान के साथ निबाहें और इरादा करें तो सिर हथेली पर रखकर उसे पूरा करें।

(तफ़सीरे कबीर, भाग 3 पृष्ठ 440प्रकाशन 2010 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 1 का शेष

मोमिन हमेशा तरक़्क़ियों की इच्छा करता है और वह ज़्यादा से ज़्यादा हक़ायक़ और मआरिफ़ (अनुभूति) का भूखा प्यासा होता है। कभी उनसे तृप्त नहीं होता। इसलिए हमारी भी यही इच्छा है कि जितने सबूत और दलीलें और मिल सकें वह अच्छा है। इसी उद्देश्य के लिए यह आयोजन पेश आया है कि हम अपने दोस्तों को नसीबैन की तरफ़ भेजते हैं। जिसके बारे में हमें पता मिला है कि वहां के हाकिम ने हज़रत मसीह को(जबकि वह अपनी ना-शुक्र गुज़ार क़ौम के हाथ से तकलीफ़ें उठा रहे हैं लिखा था कि आप मेरे पास चले आएं और सलीब की घटना से बच जाने के बाद उस स्थान पर पहुंच कर उन्होंने बदक़िस्मत क़ौम के हाथ से नजात पाई। वहां के हाकिम ने यह भी लिखा था कि आप मेरे पास आ जाएंगे तो आपकी सेवा का सौभाग्य प्राप्त करूँगा और मैं बीमार हूँ मेरे लिए दुआ भी करें यद्यपि यह एक अंग्रेज़ी किताब से हमें पता चला है,परन्तु मैं देखता हूँ कि रौज़तुस्सफा जो एक इस्लामी तारीख़ है। इस किस्म का अभिप्राय इससे भी पाया जाता है। इसलिए यह विश्वास होता है कि मसीह अलैहिस्सलाम नसीबैन में ज़रूर आए और इसी रास्ता से वह हिन्दुस्तान को चले आए हैं। सारा ज्ञान तो अल्लाह तआला को है, परन्तु हमारा दिल गवाही देता है कि इस सफ़र में इन्शा अल्लाह हक़ीक़त खुल जाएगी और असल मामला साफ़ हो जाएगा। संभव है कि इस सफ़र में ऐसी तहरीरें पेश हो जाएं या ऐसी पुस्तकें निकल आएं,जो मसीह अलैहिस्सलाम के इस सफ़र के बारे में कई बातों पर रोशनी डालने वाले हूँ या हवारियों में से किसी की क़ब्र का कोई पता चल जाए या और इस किस्म की कई बातें निकल आएं,जो हमारे मक़सद में सहायक साबित हो सकें, इस लिए मैंने अपनी जमाअत में से तीन आदमियों को इस सफ़र के लिए तैयार किया है। उनके लिए एक अरबी तसनीफ़ भी मैं करनी चाहता हूँ,जो तब्लीग़ के लिए हो और जहां-जहां वे जाएं उसको प्रचारित करते रहें। इस तरह पर इस सफ़र से यह भी लाभ होगा कि हमारे सिलसिला का प्रचार भी होता जाएगा।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ
KHALEEL AHMAD
S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad